आवश्यकता है
दैनिक गुरु एक्सप्रेस
गुरु एक्सप्रेस की प्रिंटिंग यूनिट पर रात्रि के समय 11 से 3 बजे तक काम करने वाले युवक (हेल्पर) की आवश्यकता है। वेतन योग्यता अनुसार
संपर्क
संपर्क समय- शाम 4 से 6 बजे तक
कार्यालय दैनिक गुरु एक्सप्रेस
9425105928. 8319964648

डाक पंजीयन क्र. L/ RNP/म.प्र./ मन्दसौर/122/ 2024- 26
ई-पेपर www.guruexpress.live
बात आपकी, शब्द हमारे

गुरु एक्सप्रेस

सुबह का अख़बार

संपादक – आशुतोष नवाल

वर्ष 18 | अंक 147 | पृष्ठ 4 | मन्दसौर | शुक्रवार 08 मार्च 2024 | मूल्य 2 रुपया

हार्ट केयर
श्री सिद्धि विनायक
अब नियमित सेवाएं मंदसौर में उपलब्ध
हृदय रोगों के उपचार में अंचल का जाना पहचाना नाम
हृदय रोग विशेषज्ञ
डॉ. पवन मेहता
MBBS, M.D. (Medicine) I DM (Cardiology)
Consultant Interventional Cardiology
परामर्श समय -
प्रतिदिन प्रातः 10:00 से सायं 5:00 बजे तक
12, दशपुर कुंज रोड, सिविल हॉस्पिटल के सामने, मंदसौर (म.प्र.) 07422-490333

धुएं में उड़ रही आदेश की धज्जियां

सार्वजनिक क्षेत्रों में बिक रहा कैंसर, सरकारी संस्थानों में भी धूम्रपान पर रोक-टोक नहीं!

मंदसौर, 7 मार्च गुरु एक्सप्रेस। बड़े अस्पताल में मरीजों के साथ आए परिजनों को कैंसर मुफ्त में मिल रहा है। जिला अस्पताल सहित अन्य प्रतिबंधित और सार्वजनिक स्थानों पर उड़ रहा बीड़ी-सिगरेट का धुआं सरकारी फरमान को असरकारी नहीं होने दे रहा है। सरकारी आदेश के अनुसार सरकारी कार्यालय परिसर, शैक्षणिक संस्थाओं, रेलवे स्टेशन, बस स्टैंड, मनोरंजन केंद्र, रेस्टोरेंट, न्यायालय परिसर, पुस्तकालय परिसर में धूम्रपान किया जाना अपराध है। इसके अलावा इन क्षेत्रों के आसपास 100 मीटर के दायरे में तंबाकू उत्पाद भी बेचने पर प्रतिबंध है। इसके बावजूद शासकीय महाविद्यालय, महारानी स्कूल, बालागंज स्कूल, उत्कृष्ट विद्यालय सहित कई शैक्षणिक संस्थाओं के करीब तंबाकू और सिगरेट खुलेआम बेचे जा रहे हैं। बड़े अस्पताल के मुख्य दरवाजे के बाहर लोग नियमों को धुएं में उड़ा रहे हैं। अस्पताल के सामने और दशपुर कुंज बगीचे के बाहर तंबाकू उत्पाद बिक रहे हैं। रेलवे स्टेशन और बस स्टैंड पर पुलिस का पहरा होने के बाद भी लोग धूम्रपान कर रहे हैं।

तत्कालीन कलेक्टर ने किए थे प्रयास...

वर्ष 2014 में तत्कालीन कलेक्टर शशांक मिश्र ने प्रयास किए थे। इसके बाद कोई भी प्रशासनिक अधिकारी इस मामले को गंभीरता से लेता नजर नहीं आया। तत्कालीन कलेक्टर शशांक मिश्र ने निगरानी दल गठित किया था। इसमें जिला टीबी अधिकारी , कोतवाली टीआई, खाद्य एवं औषधि निरीक्षक, डीपीसी, जिला खेल अधिकारी शामिल थे। दल को निर्देश दिए गए थे कि सप्ताह में एक बार निरीक्षण किया जाए। हालांकि सिर्फ दल गठित करने तक ही अभियान सीमित रह गया।

छात्र खरीद रहे तंबाकू उत्पाद...

18 साल से कम उम्र के बच्चों को भी पान की दुकानों व जनरल स्टोर्स से सिगरेट, बीड़ी और तंबाकू उत्पाद बेचे जा रहे हैं। स्कूल-कॉलेजों के बाहर गुमटियों पर भी इनकी बिक्री हो रही है। इसके बावजूद अभी तक कोई कार्रवाई तो दूर समझाइश भी दुकानदारों को नहीं दी गई है।

फैशन कर रहा बर्बाद...

बीड़ी, सिगरेट, गुटखे खाना युवाओं में फैशन बन गया है। एक जानकारी के अनुसार तंबाकू का 20 प्रश हिस्सा सिगरेट में इस्तेमाल होता है। इसके नुकसान का भारत में हाल देखे तो रोंगटे खड़े हो जाएंगे। लगभग 50 फीसद पुरुष और 20 फीसद महिलाएं मुंह, फेफड़ों और आंत के कैंसर से पीड़ित हैं। भारत में करीब 21 करोड़ लोग धूम्रपान की लत से पीडित हैं। एक करोड़ लोग इसके दुष्परिणामों से होने वाली बीमारियों की चपेट में हैं। 8-9 लाख इन बीमारियों के कारण मौत के मुंह में पहुंच गए हैं।

धूमधाम से मनाई जाएगी महाशिवरात्रि

जगह-जगह होंगे हवन, पूजन, अभिषेक, होगा प्रसाद वितरण

मंदसौर, 7 मार्च गुरु एक्सप्रेस। जड़ से चैतन्य होने का पर्व महाशिवरात्रि फाल्गुन माह के कृष्ण पक्ष की त्रयोदशी आज7 मार्च को मनाया जाएगा। मान्यता है कि इस दिन भगवान भोलेनाथ का विवाह माता-पार्वती के साथ हुआ था। कुछ मान्यता यह भी है कि इस दिन शिव लिंग रूप में प्रकट हुए। सनातन धर्म में इस दिन शिव मंत्र जप, पूजन, हवन, अभिषेक का बड़ा महत्व है। ज्योतिर्विदों के अनुसार हिन्दू पंचाग के आधार पर इस बार महाशिवरात्रि का पर्व 7 मार्च को मनाया जाएगा।

महाशिवरात्रि पर्व को चार प्रहर में करने का विधान है। इसमें भी रात्रि के आठवें मुहूर्त का अधिक महत्व है। महाशिवरात्रि को रात्रि में पूजा करने का विधान है। रात्रि के 4 पहर में अगर पूजा की जाए तो भोलेनाथ शीघ्र प्रसन्न होते है। महाशिवरात्रि पर मंत्र और पाठ, शिव पुराण का पाठ और महामृत्युंजय मंत्र या शिव के पंचाक्षर मंत्र 'ऊं नम: शिवाय' का जाप करना चाहिए।

सभी शिवालयों में उमड़ेगा श्रृद्धा का सैलाब...

आज महाशिवरात्रि के अवसर पर शिवालयो में श्रृद्धा का सैलाब उमड़ेगा। शहर सहित अंचल के प्रमुख शिवालयो में प्रातः बेला से ही पूजन, अभिषेक, हवन, जप का दौर चलेगा। शहर के जागेश्वर महादेव, जलेश्वर महादेव, भूतेश्वर महादेव, धुंधलीपाल महादेव, धोरेश्वर महादेव खिलचीपुरा सहित सभी प्रमुख शिवालयो पर दिन भर भजन कीर्तन, पूजन, अभिषेक का दौर चलेगा।

29 घंटे खुला रहेगा पशुपतिनाथ महादेव मंदिर...

महाशिवरात्रि के पावन पर्व पर श्री पशुपतिनाथ महादेव का मंदिर 29 घंटे लगातार खुला रहेगा। शुक्रवार अल सुबह 4 बजे मंदिर खुल जाएगा। जो शनिवार दोपहर 1 बजे भगवान का शयन किया जाएगा। प्रतिदिन दोपहर 1 से 2 बजे तक मंदिर गर्भगृह भक्तो के लिए बंद कर दिया जाता है। लेकिन, शुक्रवार को ऐसा नहीं किया जाएगा। पूरे 29 घंटे मंदिर भक्तो के लिए खुला रहेगा।

शो-पीस के लायक भी नहीं रहा महाघंटा...

प्रबंधन समिति की बैठक में उठा मामला

दो साल पहले सहस्त्र शिवलिंग मंदिर के समीप 3700 किलो वजनी महाघंटा लाया गया था। हालांकि, महाघंटा शुरुआत से ही अपने उद्देश्य पर पूरा नहीं उतर पाया। महाघंटे का पेंडल कुछ समय में ही निकालना पड़ा। इसके बाद महाघंटा शो-पीस रह गया। लेकिन, अब स्थिति यह है कि दरारें चलने के कारण यह शो-पीस भी नहीं बचा है। बंद पड़े घंटे का मामला गुरुवार को पशुपतिनाथ प्रबंधन समिति की बैठक में उठा। मंदसौर कलेक्टर दिलीप कुमार यादव, पुलिस कप्तान अनुराग सुजानिया, मंदसौर विधायक विपिन जैन, नगर पालिका ...... **शेष पेज 4 पर**

ट्रक से मिला 20 क्विंटल डोडाचूरा, दो गिरफ्तार....

पांच दिन की रिमांड पर आरोपी

सब्जी के 150 टोकरों के नीचे छिपाकर रखा था 100 कट्टे डोडाचूरा

मंदसौर, 7 मार्च गुरु एक्सप्रेस। पुलिस की नारकोटिक्स विंग की मंदसौर इकाई ने एक आयशर ट्रक को रोककर उसकी तलाशी ली तो उसमे 100 बोरे में भरा 20 क्विंटल डोडाचूरा मिला। मामले में पुलिस ने मौके से 2 लोगो को गिरफ्तार किया है। पुलिस ने गुरुवार को दोनो आरोपियों को न्यायालय में पेश किया, जहां से दोनो को 11 मार्च तक नार्कोटिक्स पुलिस की रिमांड पर सौंपा गया। अब पुलिस यह पूछताछ कर रही है की आरोपी डोडाचूरा कहां से लाए और कहां देने जा रहे थे।

नार्कोटिक्स विंग टीआई संजीव परिहार ने बताया की मुखबीर सूचना पर नारकोटिक्स थाना मंदसौर के सामने आयशर ट्रक क्रमांक आरजे 30 जीबी 3067 को रोका। ट्रक सवार और चालक को नीचे उतारकर पूछताछ की गई। ट्रक की तलाशी की तो सब्जी के 150 कट्टो के नीचे छिपाकर 100 कट्टो में डोडाचूरा मिला। मामले में ट्रक चालक और उसके साथी विजय पिता विनोद भट्ट निवासी गंगानगर और राजदीप पिता दरासिंह निवासी गंगानगर को हिरासत में लिया गया। आरोपियों के विरुद्ध एनडीपीएस एक्ट की धारा 8/15 के तहत प्रकरण दर्ज किया गया। दोनो आरोपियों को न्यायालय में पेशकर रिमांड मांगा गया। जिस पर 5 दिन अर्थात 11 मार्च तक दोनो को पुलिस रिमांड पर सौंपा गया। अब पुलिस दोनो आरोपियों से विस्तृत पूछताछ कर रही है।

बीजेपी की आड़ में कब तक बचेगा नंदा...

इधर जनकारो की माने तो मामले का मास्टर माइंड नंदा है। जिसके संपर्क बीजेपी के प्रमुख नेताओं से है। यही कारण है की विंग के अधिकारी उस पर हाथ डालने में कतरा रहे है। जबकि, मामले में नंदा की संलिप्तता सीधे सामने आ रही है। देखना है की नंदा कब तक बचेगा...।

बीजेपी के सांसद गुप्ता से कांग्रेस प्रत्याशी कैसे करेगा मुकाबला..!

मंदसौर/उज्जैन, 7 मार्च गुरु एक्सप्रेस। मंदसौर-नीमच संसदीय क्षेत्र में मंदसौर, नीमच जिले के साथ रतलाम जिले का आधा जावरा विधानसभा क्षेत्र भी शामिल है। भाजपा के सांसद प्रत्याशी सुधीर गुप्ता तीसरी बार लोकसभा प्रत्याशी बने हैं और मंदसौर के ही रहने वाले हैं। बीते 10 सालों में संसदीय क्षेत्र को गहराई से जान लिया होगा, हाल की तैयारी में परसों नीमच कार्यालय की भी शुरुआत हो चुकी है, कल जावद विधायक के साथ दौरा कार्यक्रम था। पहले से जाना पहचाना क्षेत्र फिर भाजपा के मुस्तैद संगठन के कार्यकर्ता सुधीर गुप्ता के विजय अभियान को शुरू कर चुके है। दूसरी तरफ खबर लिखे जाने तक कांग्रेस किसे प्रत्याशी बनाएगी, नाम तय नहीं हो पाया था। ऐसे में राजनीतिक जगत में भी सामान्य प्रश्न उठ रहा है कि भाजपा प्रत्याशी की आक्रामक हो चुकी तैयारी के सामने कांग्रेस का प्रत्याशी कैसे मुकाबला कर पाएगा?

चन्द्रमोहन भगत

क्षेत्र की राजनीति को जानने समझने वाले आपसी चर्चा में भी कांग्रेस से लोकसभा प्रत्याशी बनने वाले का नाम एकदम से सुझा नहीं पा रहे हैं ना ही आम रहवासी मतदाता भी पूछने पर कोई नाम बता पा रहा है। दृश्य ऐसा बन गया है कि कांग्रेस का कोई भी स्थानीय कार्यकर्ता पदाधिकारी गुप्ता को टक्कर देना तो दूर सामने खड़ा होने लायक मान्यता नहीं जुटा पा रहा है। यह तय है कि कोई ना कोई कांग्रेस कार्यकर्ता प्रत्याशी बनेगा ही पर सार्वजनिक वातावरण में कोई ऐसा नाम सतह पर नहीं आ रहा है। जिसके नाम पर कांग्रेसी कार्यकर्ताओं और खासकर सुधीर गुप्ता के विरोधी और अपने ही प्रतिद्वंदियों में उत्साह तो दूर सुगबुगाहट तक के आसार नजर नहीं आ रहे हैं। इस कालम में पहले भी लिखा जा चुका है कि पहले कांग्रेसियों को संसदीय क्षेत्र में एक भाजपाई सांसद से मुकाबला करना पड़ रहा था पर अब दूसरे राज्य सभा के सांसद किसान नेता बंशीलाल गुर्जर भी हैं, जो भाजपा उम्मीदवार के साथ मैदान संभालेंगे।

वैसे भी विधायक हो या लोकसभा प्रत्याशी भाजपा संगठन के कार्यकर्ताओं मे समर्पण के साथ दायित्व निभाने का शत प्रतिशत जज्बा रहता है। वही काफी होता है भाजपा प्रत्याशी को जीताने के लिए, बड़े नाम के कार्यकर्ता प्रत्याशी के समर्थन में या मैदान में हो ना हो। आम जनमत जैसे भाजपा की राजनीतिक सांगठनिक क्षमताओं को जानता है, वैसे ही कांग्रेस के बारे में भी जानता है। विधानसभा चुनाव में जिस अंतर से कांग्रेस ने अपना जन आधार खोया है, उसे देखते हुए सुधीर गुप्ता की जीत का दावा करना अतिशयोक्ति नहीं होगा। फिर विधानसभा के बाद लोकसभा चुनाव के बीच राम मंदिर को लेकर कांग्रेस हाईकमान के रवैए ने कार्यक्रम का बहिष्कार करके खुद अपने जन आधार में कटौती करा ली थी! कांग्रेस के ही नेता प्रमोद कृष्णन और प्रदेश के पूर्व मंत्री नरेंद्र नाहटा ने भी पुनर्विचार करने की अपील की थी। किन्तु, कांग्रेस के विचारक सूत्रधार अपने ही कार्यकर्ताओं के मन की भावनाओं को समझ नहीं पाए, या समझ कर भी कुछ लोगों को खुश करने के लिए नासमझ बने रहे! सतही राजनीतिक दृश्य ...... **शेष पेज 4 पर**

आया समय उठो तुम नारी, युग निर्माण तुम्हें करना है।

महामारी के दौर में भविष्य की ओर अग्रसर नेतृत्व करती नारी शक्ति को नमन...
आज 8 मार्च अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस के अवसर पर नगर, प्रदेश व देश में नेतृत्व करती समस्त

नारी शक्ति को प्रणाम
**** शुभेच्छु ****
पिंकी कमलेश सोनी 'लाला'
पार्षद, नपा परिषद मंदसौर

प्रकृति के बाद ईश्वर ने इस दुनिया में अपने सबसे शानदार हस्ताक्षर स्त्री के रूप में किए है।
शायद इसी कारण प्रकृति, शक्ति, ममता, माया, क्षमा, तपस्या, आराधना ये सब शब्द स्त्रीलिंग है।।

महामारी के दौर में भविष्य की ओर अग्रसर नेतृत्व करती नारी शक्ति को नमन...
आज 8 मार्च अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस के अवसर पर नगर, प्रदेश व देश में नेतृत्व करती समस्त
नारी शक्ति को प्रणाम

***** बधाईकर्ता *****
श्रीमती दुर्गा विजय पाटीदार
अध्यक्ष, जिला पंचायत मंदसौर (म.प्र.)

कोमल है कमजोर नहीं तू, शक्ति का नाम ही नारी है।
जग को जीवन देने वाली, मौत भी तुझसे हारी है।।
महामारी के दौर में भविष्य की ओर अग्रसर नेतृत्व करती
happy women's DAY
नारी शक्ति को नमन...

आज 8 मार्च अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस के अवसर पर नगर, प्रदेश व देश में नेतृत्व करती समस्त
नारी शक्ति को प्रणाम
***** शुभेच्छु *****
श्रीमती भारती धीरज पाटीदार
पार्षद, नपा परिषद मंदसौर

विचार-मंथन

सुप्रीम कोर्ट की नजर में कानून की मर्यादा...

यह विचित्र है कि भ्रष्टाचार के खिलाफ कानून बनाने, उसके सफाए के लिए जंग का एलान करने वालों को खुद भ्रष्टाचार करने का एक तरह से हक हासिल था! अब सर्वोच्च न्यायालय ने कहा है कि अगर कोई भी सांसद या विधायक रिश्वत लेकर सदन में सवाल पूछता या किसी पार्टी के पक्ष में मतदान करता है, तो उस पर भ्रष्टाचार का मामला बनता है। भ्रष्टाचार का मामला उस पर उसी समय बन जाता है, जब वह रिश्वत लेता है। दरअसल, अभी तक ऐसा करने वाले विधायक और सांसद ऐसे आरोपों में कानूनी कार्रवाई से इसलिए बच कर निकल जाते रहे हैं कि संविधान के अनुच्छेद 105/194 में कहा गया है कि जनप्रतिनिधियों के सदन में कही गई किसी बात या किए गए किसी आचरण के खिलाफ अदालत में कार्रवाई नहीं हो सकती। सर्वोच्च न्यायालय ने स्पष्ट किया है कि यह अनुच्छेद पूरे सदन की सुरक्षा के मकसद से बनाया गया है, न कि किसी एक जनप्रतिनिधि की सुरक्षा के लिए। मामला दरअसल झारखंड मुक्ति मोर्चा की एक नेता से जुड़ा हुआ था, जिस पर आरोप था कि 2012 में उसने रिश्वत लेकर राज्यसभा चुनाव में दूसरे दल के प्रत्याशी के पक्ष में मतदान किया था। इस मामले में नरसिम्हा राव बनाम भारत सरकार के मामले में आए फैसले की नजीर देते हुए आरोपी को बरी करने की गुहार लगाई गई थी। मगर सर्वोच्च न्यायालय ने उस पुराने फैसले को भी अमान्य करार दे दिया। नरसिम्हा राव मामले में कुछ सांसदों पर आरोप लगा था कि उन्होंने अविश्वास प्रस्ताव के दौरान के रिश्वत लेकर सत्तापक्ष के लिए मतदान किया। यह आरोप सीबीआइ जांच में सिद्ध भी हो गया था, मगर अदालत ने उसमें इसी तर्क से हस्तक्षेप करने से इनकार कर दिया था कि सदन की कार्यवाही के दौरान सांसदों को सांविधानिक सुरक्षा प्राप्त होती है। मगर सर्वोच्च न्यायालय के ताजा फैसले से एक नई नजीर बनी है। पिछले कुछ वर्षों में जिस तरह दलबदल कानून के भीतर से गली निकाल कर सरकारें गिराने और विधायकों के दूसरे दल की सरकार में शामिल हो जाने की घटनाएं बढ़ी हैं, रिश्वत लेकर राज्यसभा चुनाव में दूसरे दल के प्रत्याशी के पक्ष में मतदान के मामले बढ़े हैं, उसमें सर्वोच्च न्यायालय का यह फैसला ऐतिहासिक माना जाएगा। अभी उत्तर प्रदेश और हिमाचल प्रदेश में जिस तरह लाइन लांघ कर दूसरे दल के प्रत्याशी के पक्ष में मतदान करने का मामला आया, उसमें भी विधायकों की खरीद-फरोख्त के आरोप लग रहे हैं। संबंधित विधायकों के दलों ने उनके खिलाफ अनुशासनात्मक कार्रवाई तो की है, मगर इससे लोकतांत्रिक मूल्यों की शुचिता का भरोसा पैदा नहीं होता। सांसद और विधायक आम लोगों के प्रतिनिधि होते हैं और जब वे रिश्वत लेकर सवाल पूछते या किसी दूसरे दल के समर्थन में उतर आते हैं, तो उससे वे सारे मतदाता छले जाते हैं, जिन्होंने बहुमत देकर उन्हें सदन में भेजा होता है। महाराष्ट्र, गोवा, बिहार और इससे पहले कर्नाटक, मध्यप्रदेश में चुनी हुई सरकारों को गिरा दिया गया और वहां अल्पमत दलों की सरकारें बन गईं। इससे लोकतांत्रिक प्रक्रिया को गहरी चोट पहुंची। सर्वोच्च अदालत ने भी कुछ मौकों पर इस प्रवृत्ति को घातक बताया था। अब ताजा फैसले से उम्मीद बनी है कि किसी भी प्रकार की रिश्वत लेकर अगर चुने हुए प्रतिनिधि लोकतांत्रिक प्रक्रिया का उल्लंघन करते हैं, तो उनके खिलाफ दंडात्मक कार्रवाई हो सकेगी। इससे शायद उनका मनोबल भी कुछ गिरेगा।

किसान को एमएसपी दी जाए तो कैसे?

योगेन्द्र यादव

वर्तमान किसान आंदोलन में एमएसपी की बहस को अब इस आखिरी मुकाम तक पहुंचा दिया है। इससे पहले सवाल यह पूछा जाता था कि एमएसपी है क्या? या आखिर किसान को एमएसपी क्यों दी जानी चाहिए? लेकिन अब सरकारी नौकरशाह, दरबारी मीडिया और किताबी अर्थशास्त्री भी यह सवाल पूछने लगे हैं कि चलो एमएसपी देनी तो पड़ेगी। अब दी कैसे जाए? किसान को कोई भी हक एक बार में नहीं मिलता। एक ही मांग मनवाने के लिए किसान को बार-बार लड़ाई लड़नी पड़ती है। चाहे अभी एमएसपी का कानून नहीं मिला हो, लेकिन इस आंदोलन में एमएसपी की लड़ाई को इस छोर तक लाने को किसान आंदोलन की जीत माना जाना चाहिए।

इस सवाल का जवाब देने से ही पहली दो भ्रांतियों से ही मुक्त होना जरूरी है। पहली भ्रांति यह है कि किसानों को एमएसपी की गारंटी देने का मतलब है कि सरकार सभी फसलों की पूरी खरीद करे। यह भ्रांति तो अलग बातों को जोड़ देने से पैदा होती है- सरकार द्वारा न्यूनतम समर्थन मूल्य दिलवाना और खुद सरकार द्वारा खरीद करना। इसी भ्रांति के चलते ही आलोचक यह आरोप लगाते हैं कि किसानों की यह मांग असंभव है। अगर सरकार के पास फंड हों भी तो सरकार सारी फसल खरीद कर क्या करेगी? उसे किस गोदाम में रखेगी? कहां बेचेगी? क्या सरकार बाजार के सारे काम अपने सर पर ले लेगी? इसमें मुसीबत तो है ही, बर्बादी और भ्रष्टाचार भी होने की बहुत संभावना है। इस आलोचना में दम है । किसानों की सभी फसलों की पूरी पैदावार को सरकार न तो खरीद सकती है और न ही उसके लिए ऐसा करना जरूरी है। किसान सिर्फ इतना चाहता है कि उसे अपनी मेहनत का हक मिले,उसे इससे मतलब नहीं कि उसे एमएसपी किस हाथ से मिले, सरकार से या व्यापारी से। दूसरी भ्रांति यह है कि सरकार को अपनी जेब से कुछ भी खर्च नहीं करना पड़ेगा, बस सिर्फ यह कानून बना दे कि एमएसपी से नीचे खरीद-फरोख्त गैर-कानूनी है। कई किसान नेता भी कहते है कि बस एमएसपी से नीचे खरीद करने वाले व्यापारी को जेल भेज दो, अपने आप किसान को सही दाम मिल जाएगा। यह धारणा भी गलत और खतरनाक है। कानून बना देने और सजा का प्रावधान करने से किसान को सही दाम तो नहीं मिलेगा, व्यापारी अपनी दुकान जरूर बंद कर लेगा और पिछले दरवाजे से किसान से ब्लैक में खरीद करेगा। ऐसे कानून पहले भी बन चुके हैं और उन्हें लागू करवाना संभव नहीं है। अगर बाजार भाव एमएसपी से बहुत नीचे है तो व्यापारी को ज्यादा दाम देने के लिए मजबूर नहीं किया जा सकता। सरकार को अपनी जेब से कुछ खर्च करना ही होगा। तो फिर कैसे लागू की जा सकती है यह गारंटी? इसके लिए सरकार को व्यापारी बनने या डंडा चलाने की बजाय होशियार नियामक की भूमिका निभानी होगी। सरकार को 3 तरह के काम करने होंगे- या तो खुद फसल खरीदे या फिर बाजार में हस्तक्षेप कर फसलों का दाम गिरने से रोके या और कुछ नहीं तो किसान को हुए नुकसान की भरपाई करे। कुल मिलाकर यह जिम्मेदारी ले कि किसान की जेब में कम से कम एमएसपी के बराबर पैसा पहुंचे, अगर सरकार अपनी जिम्मेदारी निभाने में असमर्थ रहती है तो किसान कोर्ट-कचहरी जाकर आपना हक वसूल सकता है। इन तीनों तरह की भूमिकाओं को ध्यान से समझना चाहिए। सबसे पहले तो किसान को एमएसपी दिलाने के लिए सरकार आज जितनी खरीद करती है, उससे कुछ ज्यादा खरीद कर सकती है। सरकार स्वास्थ्य की दृष्टि से ज्वार, बाजरा जैसे मोटे अनाज को प्रोत्साहन देने की योजनाएं चला रही है। उसके लिए सबसे उपयुक्त होगा कि सरकार उन्हें बाजार में एमएसपी पर खड़ा कर सस्ते दाम पर बेचे। इसी तरह सरकार राशन में अनाज के साथ-साथ दाल और रसोई का तेल भी दे सकती है। मिड-डे मील में ज्यादा फल, दूध और अंडा दिया जाना चाहिए। इससे 'एक पंथ दो काज' होंगे। देश की सेहत सुधरेगी और कुछ किसानों को एमएसपी भी मिलेगी। जाहिर है इस योजना की सीमा है और इसे अधिकांश फसलों पर लागू नहीं किया जा सकता। अधिकांश किसानों को बाजार में वाजिब दाम दिलवाने का सबसे प्रभावी तरीका होगा सरकार द्वारा बाजार में चुनिंदा हस्तक्षेप कर बाहरी भाव को गिरने से रोकना। यह कोई अनहोनी या असंभव बात नहीं है। कपास की फसल में कॉटन कार्पोरेशन ऑफ इंडिया यही करता है। बाजार का अनुभव यही बताता है कि दाम तभी गिरते हैं अगर किसी वस्तु की आपूर्ति उसकी मांग से ज्यादा हो जाए। ऐसे में सरकार अगर 5 से 10 प्रतिशत फसल भी खरीद ले तो बाजार में दाम संभल जाते हैं। भारत सरकार की एक पुरानी योजना है 'मार्केट इंटरवैंशन स्कीम' जिसका यही उद्देश्य है। दिक्कत यह है कि इस योजना को कभी भी पर्याप्त फंड नहीं मिलता। इस सरकार ने तो पिछले साल इस योजना को लगभग बंद ही कर दिया। इस योजना के लिए पर्याप्त फंड देकर एक नियामक संस्था बनाने से बाहरी भाव को एमएसपी से नीचे गिरने से रोका जा सकता है। बाजार भाव को नियमित करने के अलावा सरकार के हाथ में और भी कई औजार हैं। कम से कम सरकार आयात-निर्यात के जरिए फसल के दाम गिराने का काम तो बंद कर सकती है। फसल के निर्यात पर यदा-कदा बैन लगाना और पैदावार कम होते ही बड़ी मात्रा में आयात कर लेने से किसान को सही दाम नहीं मिल पाते। इन नीतियों को रोकना पड़ेगा, किसान को गैर-जरूरी आयात से बचाना और उसके लिए निर्यात के अवसर ढूंढना सरकार की जिम्मेदारी है। सरकार किसान को बेहतर दाम देने वाली सहकारी समिति या एफ.पी.ओ. को समर्थन और सहयोग दे सकती है। किसान को हड़बड़ी में सस्ते में फसल न बेचनी पड़े इसके लिए सरकार वेयरहाऊस रिसीप्ट योजना में सुधार कर उसे एमएसपी से जोड़ सकती है। अगर इन सब तरीकों से काम न बना तो सरकार को तीसरा और अंतिम उपाय करना पड़ेगा। अगर सरकारी खरीद और हस्तक्षेप के बावजूद कोई फसल एमएसपी से नीचे बिकती है तो सरकार को किसान को हुए नुकसान की भरपाई करनी होगी।

दिल्ली में कितना सफल होगा बीजेपी का दांव?

उमेश चतुर्वेदी

दिल्ली में अरसे से माना जा रहा था कि नई दिल्ली की सांसद मीनाक्षी लेखी को जरूर बदला जाएगा। इसी तरह मनोज तिवारी भी दिल्ली बीजेपी के पारंपरिक पंजाबी, बनिया और स्थानीय आधार वोट बैंक के निशाने पर रहे। लेकिन जिस तरह उन्हें तवज्जो दी गई है, उससे साफ़ है कि पार्टी आलाकमान बिहार और पूर्वी उत्तर प्रदेश के प्रवासियों के समर्थन के महत्व को समझने लगा है। इससे दिल्ली बीजेपी की राजनीति पर पारंपरिक रूप से प्रभावी रहे वर्ग को भी संदेश देने की कोशिश की गई है कि दिल्ली की बदली हुई डेमोग्राफ़ी को समझते हुए अपनी सोच बदलें। नई दिल्ली से मीनाक्षी की जगह पर बांसुरी स्वराज को मौक़ा देने का मतलब साफ़ है कि पार्टी केजरीवाल के सामने संयत और युवा नेतृत्व को उभारना चाहती है। रमेश बिधूड़ी और प्रवेश वर्मा की शिकायतें आलाकमान को मिलती रही हैं। दोनों के बारे में कहा जाता रहा है कि अपने क्षेत्र के एक वर्ग के लोगों से या तो वे मिलते नहीं थे या फिर उन्हें अनदेखा करते थे। रमेश बिधूड़ी संसद में अपनी बदजुबानी को लेकर विपक्षी निशाने पर भी रहे। उनकी छवि भी दबंग की रही है।हालांकि उनकी जगह पर लाए गए रामवीर बिधूड़ी कभी जनता दल और फिर लोक जनशक्ति पार्टी में रहे हैं। बेशक आज वे बीजेपी में हैं लेकिन पार्टी का कोर कार्यकर्ता उन्हें उस तरह स्वीकार नहीं करता, जैसे पारम्परिक संघ पृष्ठभूमि के बीजेपी नेताओं को स्वीकार करता है। चुनाव अभियान के दौरान इस ओर भाजपा को विशेष ध्यान देना पड़ेगा। प्रवेश वर्मा के न रहने से अगर किसी ने राहत की सांस ली है तो वे हैं महाबल मिश्र जो अब आम आदमी पार्टी से उम्मीदवार हैं। वे खुद मान रहे थे कि प्रवेश वर्मा के चलते उनका चुनावी समर कठिन है। चाँदनी चौक से जिन डॉ. हर्षवर्धन को हटाया गया है, वे दिल्ली बीजेपी के सर्वाधिक लोकप्रिय चेहरे रहे हैं। पार्टी की अंदरूनी राजनीति में उनकी अगुआई को दो-दो बार किनारे लगा दिया गया। टिकट कटने से वे निराश भी हैं। उन्होंने राजनीति से संन्यास का ऐलान भी कर दिया है। उनकी जगह जिन प्रवीण खंडेलवाल को चाँदनी चौक से उम्मीदवार बनाया गया है, वह भी विद्यार्थी परिषद के सदस्य रहे हैं। बनिया वर्ग के हैं और कारोबारियों में उनका असर भी है। दिल्ली में इस बार बीजेपी का मुक़ाबला आम आदमी पार्टी और कांग्रेस के गठबंधन से है। आम आदमी पार्टी ने अपने चार उम्मीदवार उतार दिए हैं, जबकि कांग्रेस ने अपने तीनों उम्मीदवारों का नाम घोषित नहीं किया है। पिछले आम चुनाव में बीजेपी ने हर सीट पर पचास प्रतिशत से ज्यादा वोट हासिल किए थे। शायद यही वजह है कि पार्टी अपने उम्मीदवारों को बदलने का जोखिम उठा रही है। लेकिन जरूरी नहीं कि हर बार पिछले नतीजे दोहराए ही जायें, इसलिए हर पार्टी को ज्यादा सावधान रहना होगा। तीसरी बार सरकार बनाने को लेकर बीजेपी ने सारे घोड़े खोल रखे हैं। हर कार्यकर्ता को कम से कम 50 वोट बढ़ाने का ज़िम्मा दिया गया है। इसके बावजूद थोक में टिकट काटे जाने से भितरघात और अनदेखी का भी खतरा होगा। जिनके टिकट काटे गए हैं, खुले तौर पर भले ही अपना गुस्सा न जता रहे हों, लेकिन सच है कि वे गुस्से और क्षोभ से भरे हैं। बीजेपी इस नज़रिए से अपने लोगों को साधने की कोशिश कर ही रही होगी, लेकिन क्या होगा यह तो चुनाव परिणाम ही बतायेगा। वहीं कॉंग्रेस और आम आदमी पार्टी की कोशिश बीजेपी के अन्तर्विरोध को उभारने की है। उन्हें लगता है कि बीजेपी का अंतर्विरोध जितना उभरेगा, उतना ही उनके लिए फ़ायदेमंद होगा। लेकिन बीजेपी की छवि अनुशासित पार्टी की है, इसलिए सतह पर अंदरूनी असंतोष के आने की गुंजाइश कम ही है। बीजेपी को प्रधानमंत्री मोदी की लोकप्रियता और राम मंदिर की प्राण प्रतिष्ठा से उपजे समर्थन पर ज्यादा भरोसा है, वहीं केजरीवाल को अपनी लोकलुभावन योजनाओं पर विश्वास है। हालांकि जिस तरह के उम्मीदवार उन्होंने उतारे हैं, उनसे चुनावी समर में बहुत भरोसा नहीं जगता। कुछ जानकार तो यहाँ तक दावा कर रहे हैं कि केजरीवाल दिल्ली के नतीजे समझ गये हैं।

प्रत्याशी घोषणा में बढ़त के मायने

किसी भी जंग में समय रहते बड़ी सेना उतारने के अपने फायदे है। चुनावी मैदान में भी पहले आई सेना की ताकत स्वतः ही कुछ ज्यादा हो जाती है। इस लिहाज से देखें, तो भारतीय जनता पार्टी के 195 लोकसभा प्रत्याशियों की सूची सबसे जल्दी आ गई है और उसके बाद चुनावी सरगर्मी भी बहुत बढ़ती जा रही है। ज्यादातर लोगों का चुनावी विश्लेषण इसी आधार पर रहता है कि कितने ओबीसी को टिकट दिए, कितने एसटी को टिकट दिए। विश्लेषण में सामाजिक समीकरणों पर ध्यान देने की कोशिश होती है। अभी जब राज्यसभा के चुनाव हुए थे, उसमें भी यही देखा जा रहा था कि कैसे भारतीय जनता पार्टी जीतने के लिए अलग-अलग तरह से कोशिशें कर रही है। सूची देखकर लगता है, भाजपा ने टिकट देते समय विभिन्न वर्गों का ध्यान रखा है। युवाओं को भी तरजीह मिली है। भाजपा के 47 प्रतिशत प्रत्याशी ऐसे हैं, जिनकी उम्र 50 से भी कम है। युवा नेताओं पर ज्यादा भरोसा करना वाकई कारगर साबित हो सकता है। बहरहाल, किसको टिकट मिला से ज्यादा चर्चा इस बात की हो रही है कि किसका टिकट कट गया। भाजपा ने ढेर सारे सांसदों और मंत्रियों के टिकट काट दिए हैं। दिल्ली को अगर देखें, तो 7 सीटों में चार सीटों पर पिछली बार जीते प्रत्याशी को मौका नहीं दिया है। खैर, अगर हम यह देखने की कोशिश करें कि किस आधार पर टिकट कटा है या किस आधार पर बंटा है, तो इसका कोई तय ढर्रा या पैटर्न नजर नहीं आता है। कई ऐसे नाम चल रहे थे, जिनके बारे में लग रहा था कि इनका टिकट कट जाएगा, पर उनका टिकट नहीं कटा, जैसे मथुरा से हेमा मालिनी का टिकट। कोई भी पार्टी कितनी भी ताकतवर हो जाए, टिकट देने की प्रक्रिया अलग ही होती है, इसका कोई तय फॉर्मूला नहीं होता है। टिकट वितरण के बारे में किसी को कुछ पता नहीं होता है। सर्वोच्च नेताओं के अलावा किसी को मालूम नहीं होता है कि निर्णय क्या और कैसे लिया जा रहा है। लगभग हर पार्टी के हाईकमान के साथ ऐसा ही है, किसी भी पार्टी में चंद लोग ही जानते हैं कि किसको टिकट मिलेगा और किसका कटेगा। यह बात नई नहीं है, जो नेता टिकट देने का फैसला कर रहे होते हैं, उन्हें अनेक पैमानों पर विचार करना पड़ता है। युवाओं को भी उतारना है, महिलाओं को भी टिकट देना है, टिकट ऐसे नहीं बांटना है कि अन्य सीटों पर भी उसका नकारात्मक असर हो। कुल मिलाकर, भारतीय लोकतंत्र में टिकट बंटने की प्रक्रिया सहज नहीं, बल्कि बहुत जटिल होती है और इसे पुरस्कार या दंड के लेंस से नहीं देखा जा सकता। बहरहाल, इस आधार पर भी विवेचना हो रही है कि फलां ने अच्छा काम किया था, पर टिकट कट गया या फलां ने खराब काम किया था, फिर भी टिकट मिल गया। जाहिर है, बार-बार चर्चा होगी कि किस आधार पर टिकट कटा होगा? यह माना जाता है कि जिनका टिकट कटा है, उनका जनता से जुड़ाव अच्छा नहीं था। उनका अपनी पार्टी या संगठन से तालमेल सही नहीं था। कुछ लोग ऐसे भी थे, जो अक्खड़ किस्म के थे, अपनी दुनिया में मस्त रहते थे, उन पर अब पार्टी दांव लगाकर खतरा उठाना नहीं चाहती है। हालांकि, किसी भी पार्टी में ऐसे लोग भी होते हैं, जो अच्छा काम कर रहे होते हैं, पर आलाकमान में कोई उनकी पैरवी करने वाला नहीं होता है, तो टिकट कट जाता है। ऐसा भी लगता है कि भाजपा अब ऐसे लोगों को टिकट देना नहीं चाहती है, जो समुदाय विशेष के खिलाफ तीखी टिप्पणी के लिए जाने जाते हैं। यहां आप रमेश बिधूड़ी का नाम ले सकते हैं, जिनका टिकट कट गया है।

मोदी का परिवार लिखने से काम नहीं चलेगा बर्थ सर्टिफिकेट में पिता का नाम चेंज कराओ: लालू की लाडली का बीजेपी पर तंज

आज का राशिफल

मेष

वृषभ

मिथुन

कर्क

सिंह

कन्या

तुला

वृश्चिक

धनु

मकर

कुंभ

मीन

सुडोकू पहेली क्रमांक- 5168

	7			3			1	
1	3	9		8	2		6	
6							8	
7		2						1
			9		4			
8						9		6
	8							5
	5		1	4		2	9	7
	1			9			3	

नियम : प्रत्येक पंक्ति में 1 से 9 तक अंक भरे जाने आवश्यक हैं, इनका क्रमवार होना आवश्यक नहीं है। आड़ी व खड़ी पंक्ति में एवं 3x3 के वर्ग में अंक की पुनरावृत्ति न हो, पहले से मौजूद अंकों को आप हटा नहीं सकते।

सुडोकू पहेली क्र. 5167

6	1	3	7	5	9	8	2	4
4	8	9	2	1	6	3	7	5
5	2	7	8	3	4	6	1	9
9	6	5	1	7	8	4	3	2
3	7	8	5	4	2	9	6	1
1	4	2	6	9	3	7	5	8
2	5	4	9	6	7	1	8	3
7	9	1	3	8	5	2	4	6
8	3	6	4	2	1	5	9	7

वर्ग पहेली 5168

संकेत: बाएं से दाएं

1. 1513 की शाब्दी मुगल सम्राट अकबर ने मध्यप्रदेश के इस पड़ोसी राज्य को फतह किया था (4)
5. यह लोकप्रिय देश की राजधानी है (3)
8. चुनौती देना, आह्वान करना, ललकार (5)
10. तौल की एक प्राचीन इकाई, हृदय, चित्त, जी (2)
11. निकलना, अतीत होना, विदा होना (2)
12. अभिमुख, सामने उपस्थित (3)
13. अंतर्राष्ट्रीय टेस्ट क्रिकेट में भारत की ओर से पहला शतक लगाने वाला भारतीय क्रिकेटर (1933 में इंग्लैंड के विरुद्ध 118)(7)
19. प्रबल अभिलाषित होना, तीव्र उत्कंठित होना (4)
20. दक्षिण पवन, मलयानिल (3)
21. ध्यान मग्न, अविचल दृष्टि (3)
23. परिक्रमणशील (3)
24. सदृश, समान, मिसाल, उदाहरण (3)

संकेत: ऊपर से नीचे

1. यह भारत के दो बार कार्यवाहक प्रधानमंत्री रहे (27 मई 1964 से 9 जून 1964 व 11 जनवरी 1966 से 24 जनवरी 1966) (8)
2. दग्ध होना, उष्ण लगना (3)
3. पूर्णमासी (2)
4. दया, करुणा, रहम (3)
6. कमरा को अंग्रेजी में यह कहते है (2)
7. वैभव, पावर, उजाला (4)
9. मशहूर, प्रसिद्ध, ख्याति प्राप्त (4)
14. मंगल ग्रह इस रंग का कहलाया गया है (2)
15. इस मुगल सम्राट ने दीन-ए-इलाही धर्म चलाया था (4)
16. मकान मालक, पुस्तकालय (3)
17. उपाधि, हस्म (3)
18. पृथ्वी पर विचरण करने वाली प्राणी (4)
22. अरण्य, जंगल (2)

वर्ग पहेली 5167 का हल

नपा परिषद की बजट बैठक में वित्तीय वर्ष 2024-25 के अनुमानित आय-व्यय के प्रस्ताव को मिली मंजूरी

श्री खिड़की माता एवं राष्ट्रीय एकता नाहर सैय्यद मेला के प्रस्ताव भी हुए मंजूर

मंदसौर, 7 मार्च गुरु एक्सप्रेस। नगरपालिका परिषद की बजट बैठक गुरूवार को नपा कार्यालय के सभागृह में आयोजित हुई नपाध्यक्ष श्रीमती रमादेवी बंशीलाल गुर्जर की अध्यक्षता में आयोजित इस बैठक में नगरपालिका परिषद के सदस्यों के द्वारा आगामी वित्तीय वर्ष 2024-25 के अनुमानित आय-व्यय (बजट) को मंजूरी प्रदान की गई। प्रस्तावित बजट का वाचन वित्त राजस्व एवं लेखा समिति सभापति श्रीमती कौशल्या प्रहलाद बंधवार ने किया। बैठक में मुख्य नगरपालिका अधिकारी श्री सुधीर कुमार सिंह, नगरपालिका उपाध्यक्ष श्रीमती नम्रता प्रितेश चावला सहित नपा के सभापतिगण एवं पार्षदगण उपस्थित थे। प्रस्तावित बजट में अगले वित्तीय वर्ष के लिये 484 करोड 19 लाख 12 हजार रू. की आय तथा 483 करोड 87 लाख 32 हजार का व्यय अनुमान है। बजट में 31 लाख 80 हजार रू. की बचत संभावित है। नपाध्यक्ष श्रीमती गुर्जर की परिषद ने बजट में किसी भी प्रकार के नये कर का प्रस्ताव नहीं किया गया है और न ही किसी भी कर में वृद्धि की गई है। नपा परिषद की बैठक में बजट पर चर्चा के बाद प्रकरण क्र. 2 व 3 पर भी संक्षिप्त चर्चा हुई। जिसके अंतर्गत राष्ट्रीय एकता हजरत नाहर सैय्यद मेला एवं श्री खिडकी माता मेला के आयोजन के प्रस्ताव पर भी चर्चा की गई। पूर्व नपा अध्यक्ष श्री राम कोटवानी के सुझाव पर नपा के पार्षदगणों ने दोनों मेलों के आयोजनों के लिये आवश्यक कार्यवाही करने व समिति केगठन के लिये नपाध्यक्ष श्रीमती रमादेवी बंशीलाल गुर्जर को अधिकृत किया गया।

राजस्व, वित्त एवं लेखा समिति की सभापति श्रीमती कौशल्या बंधवार ने बजट प्रस्तुत करते हुये कहा कि म.प्र. शासन के मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव की मंशा अनुसार अवैध कॉलोनियों में नवीन विकास कार्यों कें लिये बजट में 10 करोड रू. की राशि का प्रावधान है। तेलिया तालाब में पर्यटन को बढावा देने एवं उसके सौंदर्यकरण के लिये अमृत योजना 2 के अंतर्गत 2 करोड 50 लाख रू. की राशि बजट में रखी गई है। सिंहस्थ योजना अंतर्गत मंदसौर नगर में विभिन्न विकास कार्यों हेतु 31 करोड 40 लाख रू. की राशि का प्रावधान किया गया है। स्वच्छता गतिविधियों के प्रोत्साहन एवं मंदसौर नगर में नवीन शोचालय एवं मुत्रालय के निर्माण हेतु 1 करोड 10 लाख रू. की राशि का प्रावधान बजट में किया गया है। राजस्व वित्त एवं लेखा समिति सभापति ने बजट प्रस्तुत करते हुए मंदसौर नगर की सडकों के डामरीकण के लिये एवं कायाकल्प अभियान अंतर्गत 9 करोड रू. की राशि रखी गई है। नगर में विभिन्न स्थानों पर पुलिया एवं नाला नाली निर्माण हेतु 5 करोड रू. की राशि का प्रावधान भी बजट में है। मंदसौर नगर में गंदे पानी की निकासी और बेहतर हो इसके लिये सीवरेज योजना हेतु 164 करोड रू. की राशि का प्रावधान बजट में किया गया है। नगरपालिका के ट्रेचिंग ग्राउण्ड पर जहां प्रतिदिन मंदसौर नगर का कचरा एकत्रित होता है वहां कचरे की मात्रा बहुत अधिक बडने के कारण आगामी समय में कोई परेशानी न हो इसके लिये कचरे के निपटान हेतु लेगेसी वेस्ट मेनेजमेंट एवं नवीन कचरा उपचार हेतु साइंटिफिक सेनेटरी लेण्डफिल के निर्माण हेतु 9 करोड रू. की राशि बजट में रखी गई है। प्रस्तावित बजट में हुडकों के मद से संजय गांधी उद्यान में बहुउद्देश्यीय सामुदायिक भवन के निर्माण एवं संजय गांधी उद्यान के कायाकल्प हेतु भी राशि रखी गई है। मंदसौर नगर के चौराहों के सौंदर्यीकरण एवं नये चौराहों के निर्माण आदि कार्यों कें लिये 1 करोड रू. की राशि एवं नवीन फायर बिग्रेड स्टेशन के निर्माण हेतु 50 लाख रू. की राशि बजट में रखी गई है। नगरपालिका के द्वारा योग्य भूमि पर नये पिकनिक स्पॉट का निर्माण भी प्रस्तावित है। जिसके लिये 50 लाख रू. की राशि का प्रावधान किया गया है। 10 मेगावाट के सौलर विद्युत उत्पादन केन्द्र की स्थापना के लिये 1 करोड रू. की राशि रखी गई है। नपा परिषद के बजट में प्रधानमंत्री आवास योजना के लिये 7 करोड रू. राशि रखी गई है।

बजट पर चर्चा करते समय कई नपा सभापतिगणों एवं पार्षदगणों ने भी अपने सुझाव एवं बजट के संबंध में अपनी बात कही। पूर्व नपाध्यक्ष राम कोटवानी ने प्रस्तुत किये गये बजट को सराहनीय बताया और कहा कि रमादेवी गुर्जर की परिषद ने जो बजट प्रस्तुत किया है उससे नगर के विकास को गति मिलेगी। नगरपालिका नेता प्रतिपक्ष एवं पार्षद रफत पयामी ने श्री खिडकी माता मेला एवं नाहर सैय्यद मेला का आयोजन भव्य रूप से करने का सुझाव रखा तथा इस संबंध में आदर्श आचरण संहिता लागू होने के पूर्व दोनों मेलों के लिये समिति बनाने का भी सुझाव दिया। उनके इस सुझाव का पार्षद सुनील बंसल ने भी समर्थन किया। इस बैठक में नपा पार्षदगण श्रीमती सुनीता नंदलाल गुजरिया, पार्षद रेखा राजेश सोनी ऐरावाला, पार्षद पिंकी विनय दुबेला ने बजट में किये गये विभिन्न विकास कार्यों कों सराहनीय बताया। पार्षद सुनील बंसल ने पूर्व नपाध्यक्ष प्रहलाद बंधवार की प्रतिमा लगाने का भी सुझाव दिया। श्रीमती भारती धीरज पाटीदार, श्रीमती गरिमा हितेन्द्र भाटी, श्रीमती प्रतिभा विक्रम भैरवे, आशीष गौड़, श्रीमती दीपमाला मकवाना ने बजट प्रस्तावों का समर्थन किया और कई सुझावों से भी परिषद को अवगत कराया। पार्षद तरूण शर्मा, नगमा पिता न्याज अहमद ने भी अपने विचार रखे। नपा परिषद की बैठक में विधायक प्रतिनिधि अशोक रैकवार, नपा सभापतिगण निर्मला चंदवानी, सत्यनारायण भांभी, रमेश ग्वाला, शांति दिनेश फरक्या, पार्षदगण पिंकी कमलेश सोनी, प्रीतम पंचोली, ईश्वरसिंह चौहान एड., सुनीता अशोक भावसार, प्रमिला संजय गोयल, दिव्या अनूप माहेश्वरी, खेरून बी शेहजाद पटेल, संगीता शैलेन्द्र गोस्वामी, तबस्सुम साबिर हुसैन, कमरूनिशा अंसारी, बब्बन युसुफ गौरी, माया नीलमचंद भावसार, भावना पमनानी, कमलेश सिसौदिया, शराफत शेख, प्रतिभा विक्रम भैरवे, गोवर्धन कुमावत, दीपक गाजवा, मंजू अनिल मालवीय भी उपस्थित थे। बैठक में लेखाधिकारी गौरव नलवाया ने आय-व्यय पत्रक का वाचन किया। बिन्दु क्र. 2 व 3 का वाचन नरेन्द्र परमार ने किया। राष्ट्रगान के साथ बैठक का समापन हुआ।

मंदसौर में टिमरनी ने जीता कबड्डी लीग का खिताब

महिला दिवस पर पहली बार महिला कबड्डी लीग का सफलता पूर्वक आयोजन

मंदसौर, 7 मार्च गुरु एक्सप्रेस। शासकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय मंदसौर द्वारा अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस के अवसर पर आयोजित राज्य स्तरीय कबड्डी महिला प्रतियोगिता का समापन एक शानदार फाइनल मुकाबले के साथ हुआ प्रतियोगिता का फाइनल मुकाबला टिमरनी और रीवा के बीच खेला गया, जिसमे टिमरनी की टीम ने संघर्ष पूर्ण मुकाबले में रीवा को हरा कर विजेता ट्रॉफी पर कब्जा किया। उपविजेता ट्रॉफी रीवा को टीम को मिली और तृतीय स्थान सागर टीम ने हासिल किया।

प्रतियोगिता के बेस्ट डिफेंडर का अवार्ड शिवानी लोधी(सागर), बेस्ट रेडर का अवार्ड तुषा सिंह(टिमरनी) और बेस्ट प्लेयर ऑफ टूर्नामेंट का अवार्ड अंकिता सिंह (रीवा) को दिया गया। आयोजन समिति द्वारा विजेता टीम को 21000, उपविजेता टीम को 11000 और तृतीय स्थान पर रहने वाले टीम को 5100 का ईनाम दिया गया। उल्लेखनीय है कि शासकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय केतत्वावधान में मंदसौर में पहली बार महिला कबड्डी लीग का आयोजन हुआ। समापन समारोह में मुख्य अतिथि नगरपालिका अध्यक्ष श्रीमती रमादेवी गुर्जर, नगरपालिका उपाध्यक्ष श्रीमती नम्रता चावला, वरिष्ठ पत्रकार श्री अशोक झलोया, श्री राजपाल सिंह परिहार, श्री मनीष पुरोहित, कॉलेज प्राचार्य डॉ एल एन शर्मा थे। अतिथियों ने विजेता खिलाड़ियों और टीमों को पुरस्कृत किया। महाविद्यालय की जनभागीदारी समिति के अध्यक्ष श्री नरेश चंदवानी ने सभी अतिथियों का स्वागत किया। महाविद्यालय के खेल अधिकारी श्री राजू कुमार ने बताया कि प्रतियोगिता में कुल 14 टीमों ने सहभागिता की और दिवसीय मुकाबले में कुल 20 मैच खेले गए। प्रतियोगिता के दौरान कॉलेज ग्राउंड पर अच्छी संख्या में दर्शक और खेल प्रेमियों ने खिलाड़ियों के हौसला बढ़ाया। समापन समारोह को संबोधित करते हुए नपाध्यक्ष श्रीमती रमादेवी गुर्जर ने कहा कि निश्चित रूप से यह आयोजन मंदसौर में छात्राओं को खेलों के लिए प्रोत्साहित करेगा। मंदसौर का यह आयोजन सराहनीय है। मैं सभी आयोजकों को इस स्पर्धा हेतु शुभकामनाएं देती हूं।

शिव-पार्वती विवाह के उपलक्ष्य में द्वादश ज्योतिर्लिंग मंदिर में किया हल्दी रस्म का आयोजन

मंदसौर, 7 मार्च गुरु एक्सप्रेस। प्रतिवर्षानुसार इस वर्ष भी महिला भक्त मित्र मंडल स्नेह नगर मन्दसौर के द्वारा शिव महोत्सव के पावन पर्व को पांच दिन से मनाया जा रहा है। जिसके तहत भगवान शिव-पार्वती विवाह के रस्मों के तहत महिलाओं ने हल्दी रस्म का आयोजन किया गया। जिसमें महिलाओं ने पीले वस्त्र धारण कर भगवान शिव को हल्दी लगाई। साथ ही महाशिवरात्रि की पूर्व संध्या पर महिला संगीत का आयोजन भी रखा गया।

आज 8 मार्च 2024 शुक्रवार को प्रात: 6.30 महादेव की पूजा अर्चना

कर अभिषेक होगा उसके बाद पुन: दोपहर 2 बजे से 4 बजे के बीच मे सामूहिक अभिषेक होगा। शाम को 5 से 7 में श्रृंगार कर 7.30 बजे महाआरती व ठीक उसके बाद आम उपस्थित भक्त लोगों के लिए 251 लीटर दूध की ठंडाई व 151 किलो साबुदाने की खिचडी वितरण की जाएगी। महिला भक्त मित्र मंडल स्नेह नगर मन्दसौर द्वारा सभी भक्तों से पधार कर कार्यक्रम एवं मंदिर की गरिमा बढ़ाते हुवे आयोजन को सफल बनाने की अपील की गई। यह जनकारी मंदिर के सदस्य श्री एस एल शर्मा ने दी।

श्री पशुपतिनाथ महादेव मंदिर में महाशिवरात्रि पर आज 51 क्विंटल फरियाली खिचड़ी का वितरण

मंदसौर, 7 मार्च गुरु एक्सप्रेस। श्री कृष्ण कामधेनु सामाजिक एवं धार्मिक लोक न्यास के तत्वावधान में प्रतिवर्षानुसार इस वर्ष भी महाशिवरात्रि पर्व पर आज दिनांक 8 मार्च, शुक्रवार को भूतभावन भगवान श्री पशुपतिनाथ महादेव मंदिर में 51 क्विंटल फरियाली खिचडी का प्रसाद वितरित किया जाएगा। संस्था द्वारा महाशिवरात्रि पर आज प्रात: 11 बजे राजभोग दर्शन के बाद भगवान पशुपतिनाथ को फरियाली खिचडी का नैवेद्य लगाया जाएगा तत्पश्चात् श्रद्धालुओं को प्रसाद वितरण होगा। श्री कृष्ण कामधेनु सामाजिक एवं धार्मिक लोक न्यास ने सभी शिवभक्तों से भगवान पशुपतिनाथ मंदिर में उपस्थित होकर फरियाली खिचडी का प्रसाद ग्रहण करने का आव्हान किया है।

शिवरात्रि पर भव्य शास्त्रीय एवं सुगम संगीत से रात्रि पर्यन्त होगा जागेश्वर महादेव का महाअभिषेक

मंदसौर, 7 मार्च गुरु एक्सप्रेस। नीम चौक स्थित नगर के अत्यन्त प्राचीन एवं चमत्कारी शिवालय श्री जागेश्वर महादेव मंदिर में परम्परानुसार 8 मार्च को रात्रि 10 बजे से आमंत्रित संगीत कलाकारों द्वारा रात्रि पर्यन्त भारतीय शास्त्रीय तथा सुगम संगीत की मधुर स्वर लहरियों से भगवान जागेश्वर का महाभिषेक होगा।

उक्त जानकारी देते हुए सामाजिक कार्यकर्ता बंशीलाल टांक ने बताया कि 18 मार्च को प्रात: 4 बजे से भगवान जागेश्वर का शिव भक्तों द्वारा पंचामृत से अभिषेक पूजन प्रारंभ हो जायेगा जो दिन भर जारी रहेगा। संध्या को भगवान जागेश्वर का नयनाभिराम श्रृंगार होकर प्रथम महाआरती रात्रि 8 बजे, द्वितीय महाआरती मध्य रात्रि 12 बजे, तृतीय महाआरती 9 मार्च को ब्रह्ममुहूर्त में 3 बजे तथा अन्तिम मंगला आरती प्रात: 6 बजे होगी। जागेश्वर महादेव समिति ने सभी शिवभक्तों से शिवदर्शन में सम्मिलित होकर शिवभक्ति का लाभ लेने का अनुरोध किया है।

श्री भूतेश्वर महादेव मंदिर पर महाशिवरात्रि पर्व धूमधाम से मनेगा

मंदसौर, 7 मार्च गुरु एक्सप्रेस। प्रतिवर्ष अनुसार इस वर्ष भी पुरानी सब्जी मंडी घंटाघर स्थित अति प्राचीन एवं चमत्कारी श्री भूतेश्वर महादेव मंदिर में आज 8 मार्च को महाशिवरात्रि पर्व धूमधाम से मनाया जायेगा। इस हेतु ट्रस्ट द्वारा समस्त तैयारी पूर्ण की गई है। महाशिवरात्रि के दिन मंदिर को विद्युत साज-सज्जा एवं पुष्पों से सजाया गया है। भगवान भूतेश्वर महादेव के दर्शन हेतु पुरुष एवं महिलाओं की अलग-अलग कतार लगाने की व्यवस्था की गयी है।

ट्रस्ट अध्यक्ष उषाबेन पटेल, उपाध्यक्ष गोपाल गुरू, सचिव ओमप्रकाश गुप्ता, सहसचिव किशनलाल शर्मा, कोषाध्यक्ष राजमल पालीवाल, सदस्य विक्रम विद्यार्थी, सुरेन्द्र कुमार बंदूकवाला, सुरेश कोठारी ने बताया गया की आज महाशिवरात्रि पर्व पर सायं 7 बजे महाआरती एवं प्रसादी वितरण होगा। रात्रि को मंदिर में भजन संध्या का आयोजन भी किया जाएगा। सूर्योदय के साथ श्री भूतेश्वर महादेव का अभिषेक प्रारंभ होगा। तथा रात्रि पहर पं. श्री गोपालकृष्ण त्रिपाठी द्वारा वेद मंत्रों के साथ भगवान भोलेनाथ का अभिषेक पाठ किया जाएगा। श्री भूतेश्वर महादेव मंदिर ट्रस्ट ने सभी भक्त जनो से आग्रह किया है कि ज्यादा से ज्यादा संख्या मे पधारकर महाशिवरात्रि पर्व पर भगवान भूतेश्वर महादेव के दर्शनों एवं प्रसादी का लाभ ले।

सभी पटवारी नियम के अनुसार कार्य करें- कलेक्टर

मंदसौर, 7 मार्च गुरु एक्सप्रेस। कलेक्टर श्री दिलीप कुमार यादव ने पीजी कॉलेज मंदसौर में पटवारी प्रशिक्षण शाला का शुभारंभ किया। पटवारियों को प्रशिक्षण छ: माह तक दिया जायेगा। जिसमें 4 माह तक ट्रेनिंग, 1 माह कम्प्युटर एवं 1 माह पटवारियों के साथ फील्ड का अनुभव देंगे। इस दौरान सीईओ जिला पंयाचत श्री कुमार सत्यम, संयुक्त कलेक्टर श्री राकेश शर्मा, डा. जेके जैन एवं पटवारी उपस्थित थे। प्रशिक्षण के दौरान कलेक्टर श्री यादव ने सभी पटवारियों को शुभकामनाएं दी। उन्होंने कहा कि सभी पटवारी नियम के अनुसार कार्य करें। प्रशिक्षण में अच्छे से लेवे। सिमांकन, रिपार्ट के बारें में कोई बात समझ में नही आती है तो पुछे हमेंशा सिखने का प्रयास करें। मन लगाकर कार्य करें। समन्वय के साथ कार्य करें। सीईओ जिला पंचायत श्री सत्यम ने कहा कि सभी पटवारियों को नियमित आना है। हमेंशा बेहतर कार्य करें। नियम कानुन के बारें में जानकारी रखे।

जिला मूल्यांकन समिति की बैठक संपन्न

नीमच, 7 मार्च गुरु एक्सप्रेस। नीमच जिले की गाइड लाइन वर्ष 2024-25 निर्धारित किए जाने हेतु जिला मूल्यांकन समिति नीमच की बैठक गुरुवार को कलेक्टर एवं अध्यक्ष जिला मूल्यांकन समिति श्री दिनेश जैन की अध्यक्षता में आयोजित की गई.। इस बैठक में उप जिला मूल्यांकन समितियों नीमच, जावद, मनासा, रामपुरा एवं सिंगोली से प्राप्त प्रस्तावों पर विचार विमर्श किया गया। उक्त प्रस्तावों पर आम जनता के सुझाव / दावे/आपत्तियां 09 मार्च 2024 को दोपहर 12 बजे तक आमंत्रित किए गए हैं। अनन्तिम प्रस्तावों का अवलोकन जिला पंजीयक कार्यालय नीमच में जाकर किया जा सकता है। उक्त तिथि एवं समय के पश्चातप्राप्त किसी भी सुझाव दावे आपत्ति पर कोई विचार नहीं किया सकेगा। यह जानकारी जिला पंजीयक श्री दुष्यंत शर्मा द्वारा दी गई है।

नाबालिग बालिका दस्तयाब

पिपलियामंडी, 7 मार्च गुरु एक्सप्रेस। पुलिस ने नाबालिग बालिका को दस्तयाब किया। जानकारी के अनुसार पिपलियामंडी थाने पर 7 मार्च को बालिका की गुमशुदगी दर्ज हुई, पुलिस ने विवेचना के दौरान सायबर सेल व मुखबिर तंत्र के माध्यम से कुछ घंटों में दस्तयाब कर उसकी मां के सुपुर्द कर दिया।

ट्रेक्टर की टक्कर से ट्रक दुर्घटनाग्रस्त, ड्राइवर, क्लीनर घायल

पिपलियामंडी, 7 मार्च गुरु एक्सप्रेस। ट्रक को टक्कर से ट्रक दुर्घटनाग्रस्त हो गई, ड्राइवर व क्लीनर घायल हो गए। पुलिस ने ट्रेक्टर ड्राइवर के खिलाफ पुलिस ने केस दर्ज किया। मल्हारगढ थाने पर हिमाचल प्रदेश के सिरमोर जिले की तहसील कमरो के गांव माशुक निवासी नरेश पिता कुन्दनसिंह कोली ने रिपोर्ट दर्ज कराई कि वह ट्रक (एचपी 17 डी 7888)में केमिकल व अन्य सामान भरकर राजपुरा पंजाब जा रहा था कि महू-नीमच मार्ग हाईवे पर न्यू खालसा ढाबे के सामने ट्रेक्टर (एमपी 14 एसी 2830) के ड्राइवर ने तेज व लापरवाहीपूर्वक चलाकर ओवरटेक कर क्लीनर साइड से टक्कर मार दी जिससे मेरा ट्रक डिवाइडर कूदता हुआ दूसरी साइड सडक पर चला गया, मेरे दोनों हाथों व मरे भाई क्लीनर ओमप्रकाश को कमर में चोंटे आई। ट्रक में भी काफी नुकसान हुआ। पुलिस ने ट्रेक्टर ड्राइवर के खिलाफ केस दर्ज किया।

आज महाशिवरात्रि पर मनोकामना महादेव पर होंगे भव्य आयोजन

नीमच, 7 मार्च गुरु एक्सप्रेस। बैकुंठ धाम स्थित चमत्कारी मनोकामना महादेव मंदिर के 165 साल पूर्ण होकर 166 साल शुरू होने पर महाशिवरात्रि के पावन अवसर पर प्राप्त 5:00 बजे भस्म आरती से भोले बाबा का अभिषेक किया जाएगा और प्रात: 6:00 बजे से आम जनता के लिए भगवान भोलेनाथ का अभिषेक शुरू होगा प्रात: 8:00 बजे आरती एवं दोपहर 2:00 बजे सुंदर झांकी का आयोजन किया जाएगा सभी धर्म प्रेमी जनता से समिति ने दर्शन करके आशीर्वाद प्राप्त करने का अनुरोध किया है समिति के संरक्षक शिव माहेश्वरी अध्यक्ष दिलीप छाजेड रमेश जायसवाल ने सभी धर्म प्रेमी जनता से आग्रह किया है कि भोले बाबा के दर्शन कर आशीर्वाद प्राप्त करें वेकुंड धाम स्थित पुलिया के समीप मनोकामना महादेव मंदिर पर महाशिवरात्रि के समस्त आयोजन बडी धूमधाम से मनाया जाएंगे और सायकाल 7:00 बजे आरती के पश्चात महा प्रसादी का भी वितरण किया जाएगा

एक भारत साड़ी वाकथान रैली का महाराणा प्रताप बस स्टैंड से हुआ शुभारंभ

मंदसौर, 7 मार्च गुरु एक्सप्रेस। आत्मनिर्भर भारत के अंतर्गत एक भारत साडी वॉकथान का शुभारंभ महाराणा प्रताप बस स्टैंड से हुआ। रैली को नगर पालिका अध्यक्षा श्रीमती रमादेवी बंशीलाल गुर्जर एवं नगर पालिका उपाध्यक्ष श्रीमती नम्रता प्रीतेश चावला द्वारा हरी झंडी दिखाकर रवाना किया। इस दौरान पूर्व विधायक श्री यशपाल सिंह सिसोदिया, स्थानीय जनप्रतिनिधि, कलेक्टर श्री दिलीप कुमार यादव, सीईओ जिला पंचायत श्री कुमार सत्यम, जिला अधिकारी एवं कर्मचारी, महिला एवं बाल विकास, स्वास्थ्य विभाग, जनअभियान परिषद, स्वयं सेवी संगठनों के महिलाएं उपस्थित थी।एक भारत साडी वॉकथान' रैली में 1200 से अधिक महिलाओ ने भाग लिया। वॉकथान' रैली महाराणा प्रताप बस स्टैंड से प्रारंभ हुई। रैली श्रीकोल्ड चौराहा से होते हुए कुशाभाऊ ठाकरे ऑडिटोरियम में रैली का समापन हुआ। वॉकथान रैली के समापन के पश्चात कलेक्टर द्वारा मतदाता जागरूकता की शपथ दिलाई गई।

सशक्त है नारी

भारी उम्मीदें
कोमल कांधे
दृढ़ विश्वास
पक्के इरादें।
पीछे से निकल
विधान को बदल
हौंसलों के पंख
उडने की तैय्यारी।
आबादी आधी
पूरी पे भारी
लाचार नहीं
सशक्त है नारी।

नंदकिशोर राठौर, मंदसौर

नारी होना बड़े सौभाग्य की बात है

बेटी, बहन, मां और जीवनसंगिनी हर रिश्ते को वो बडे प्यार से निखारती है,
भूल जाती है खुद को लेकिन दूसरों को संवारती है,
भूल के अपनी ख्वाहिशों को, वह तुम्हारी ख्वाहिशों को सजाती है,
इसीलिए तो कहते हैं, कि बेटियां सौभाग्य से मिलती है,
संघर्षों सें लडते लडते भी, वह कभी नहीं हारती है ,
झोंक देती है खुद को इम्तिहानों में, पर परिणाम तुम्हारे संवारती है,
जीवन की इस परीक्षा में लडखडाती है,
पर वह झुकना नहीं जानती है,
सहकर अपमान अपनों से ही, वह स्नेह की किरण तलाशती है,
खाती है ठोकरे जीवन की इस राह में, डगमगाती है, गिरती है,
संभलती है और जीने की राह तलाशती है,
रहकर महलों में भी वो वनवास को चली जाती है,
देवी होकर भी अग्नि परीक्षा को पार कर जाती है,
फिर थाम कर ममता का दामन धरती में समा जाती है,
सहती रहती आलोचनाओं को,
कामयाब होकर वो दिखलाती है,
होकर शक्ति का स्वरूप भी, वो ममतामयी कहलाती है
इसीलिए नारी होना बडे सौभाग्य की बात है।

दीपिका गेहलोद, मंदसौर

महाशिवरात्रि विशेष...

समस्त देवों में प्रमुख महादेव की समस्त रात्रियों में प्रमुख है महाशिवरात्रि

मंदसौर, 7 मार्च गुरु एक्सप्रेस। हिन्दू सनातन धर्म में इन्द्र सहित 33-34 करोड देवी देवताओं की मान्यता है। इनमें श्रृष्टि रचियता ब्रह्मा-पालनकर्ता विष्णु और संहारकर्ता भगवान शंकर इन तीनों में से किसी को भी महादेव नहीं कहा गया है। महादेव केवल भगवान शंकर को ही महादेव संबोधन दिया गया है। इसी प्रकार समस्त रात्रियों में सोलह कलाओं से परिपूर्ण भगवान कृष्ण की मध्य रात्रि 12 बजे अवतरित होने वाली जन्माष्टमी रात्रि और भगवान राम लल्ला का मध्य दिवस अवतरित होने वाले दिवस को महादिवस नहीं कहा गया है, परन्तु शिव के विवाहोत्सव की रात्रि 12 बजे को ही अन्य रात्रियों की तरह साधारण रात्रि नहीं कही जाकर महाशिवरात्रि कहा गया है।

महादेव क्यों कहा जाता है- राक्षसों से हमेशा पराजित होकर हार का मुख देखने वाले देवताओं ने असुरों पर विजय पाने के लिये अमृतपान कर समुद्र मंथन का आयोजन किया और अमृत के प्रलोभन में असुर भी उसमें सम्मिलित हो गये। मंदराचल पर्वत को मथानी और वासुकी नाग को रस्सी के रूप में प्रयुक्त किया और मंथन शुरू हुआ परन्तु अमृत से पहले हलाहल विष जिसकी भयंकर ज्वाला से देवता-राक्षस सब घबरा गये। प्रश्न उपस्थित हुआ इस भयंकर जहर को पान कौन करे और तब भगवान शिव ने उस विष पान कर देवों में महादेव कहलाये। भगवान भोलेनाथ को ओढर दानी अर्थात तत्काल प्रसन्न होकर बिना आगे-पीछे विचार किये चाहे सुर हो चाहे असुर हो वरदान दे देते है और इस गलती का खामियाजा उन्हें उस समय भुगतना पड जिस समय जिसके सिर पर हाथ रखो वह भस्म हो जाये जैसा अवांछनीय वरदान भस्मासुर राक्षस को दे दिया और जब परीक्षा के तौर पर उस दैत्य ने भगवान शंकर के सिर पर हाथ रखकर आजमाना चाहा तब शंकर भगवान को भागना पडा। भगवान विष्णु ने मोहनी रूप धारण कर नृत्य के माध्यम से भस्मासुर का हाथ उसी के सिर पर रखवाकर उस नराधम दैत्य को भस्म करवाया जिसमें मॉ जगदम्बा पार्वती के सौंदर्य पर आकर्षित होकर मॉ भवानी पर कुदृष्टि डाली थी।

सहज प्रसन्न होने वाले देवता महादेव- भयंकर गर्मी में न आग तपने की जरूरत कई वर्षो तक नहीं एक पैर पर खडे होकर तपस्या करने आदि कठिन जप-तप योग की आवश्यकता- मात्र एक लोठा पानी जब और एक बिल पत्र चढाने मात्र से प्रसन्न होकर अभिष्ट इच्छापूर्ति करने वाले कोई देव है तो वे है महादेव। ऐसे देवों के देव महादेव के चरणों में उनके मंगलमय विवाहोत्सव महाशिवरात्रि पर्व पर कोटीश: चरण वंदन प्रणाम। विश्व में एक मात्र प्रसिद्ध दशपुर नगर के अष्मूर्ति भगवान श्री पशुपतिनाथ सबकी मनोकामना पूरी करे। इन्हीं शुभकामनाओं के साथ।

ऊँनम: शिवाय- हर हर महादेव।

बंशीलाल टांक

मंदसौर मंडी भाव

उपज	आवक बोरी में	न्यूनतम	अधिकतम
मक्का	8	2250	2292
उडद	1	4601	4601
सोयाबीन	2600	4141	5571
गैहु	6500	2350	2901
चना	1264	4399	5721
मसुर	204	5100	5800
धनिया	500	6300	8000
लहसुन	24800	4000	14200
मैथी	1000	4830	6200
अलसी	553	4253	5260
सरसो	1148	4450	4831
तारामीरा	9	4555	4674
इसबगोल	2	15580	17101
प्याज	617	802	1600
कलोंजी	30	12001	12001
डॉलर	4	10801	10801
तिल्ली	0000	0000	0000
मटरसुखी	22	4160	5060
असालीया	206	6450	7448

सड़क हादसे में बाइक सवार युवक की मौत

रेवास देवड़ा रोड पर हादसा, हेलमेट होता तो नहीं जाती जान

मंदसौर, 7 मार्च गुरु एक्सप्रेस। मनासा निवासी और मंदसौर बंधन बैंक में पदस्थ सुभाष पिता ललित बाइक पर बिना हेलमेट के था। हालांकि, सुभाष को बाइक पर हेलमेट के साथ ही देखा जाता था। लेकिन, गुरुवार को हेलमेट पहनने से चूक हुई और हादसा हो गया। सुभाष की बाइक को एक वाहन ने टक्कर मार दी। जिससे सिर में चोट लगने से मौके पर ही सुभाष की मौत हो गई। हादसा रेवास देवड़ा रोड पर मनमोहन वाटिका के पास हुआ।

मिली जानकारी के अनुसार मनासा निवासी सुभाष बाइक पर सवार होकर रेवास देवड़ा रोड से गुजर रहा था। इसी दौरान मनमोहन वाटिका के पास एक चार पहिया वाहन ने बाइक को टक्कर मार दी। जिससे सिर में चोट लगने से सुभाष की मौके पर ही मौत हो गई। जानकारी के अनुसार चार पहिया वाहन के टॉयर फटने से वह अनियंत्रित हो गया और बाइक को टक्कर मार दी। इसके बाद वाहन चालक ने पुलिस और एंबुलेंस को सूचना दी। लेकिन जब तक एंबुलेंस पहुंचती, तब तक युवक की जान जा चुकी थी।

बीते तीन साल में हुए हादसों पर गौर करें तो हर माह औसतन 13 लोगों की मौत दुर्घटनाओं में हो रही है। प्रतिमाह औसतन 50 हादसे जिले में हो रहे हैं और 48 लोग घायल हो रहे हैं। सड़क दुर्घटना में मौत के बाद उस पर आश्रित पूरा परिवार बिखर जाता है। परेशानियों का पहाड़ टूट पड़ता है। हादसे भी सबसे ज्यादा लापरवाही के कारण ही हो रहे हैं। सड़क पर तेज गति से वाहन चलाने, बिना हेलमेट, सीट बेल्ट आदि कई कारण हैं। सड़क पर चलने के दौरान सुरक्षा के साथ ही वाहन चलाने में सतर्कता भी किसी तरह के हादसे को टालने में कारगर साबित होती है। जिन हादसों में मौतें हुई है। उनमें से अधिकांश हादसे में मृतक व गंभीर घायल बिना हेलमेट के ही थे।

जुर्माना भरने को तैयार, हेलमेट नहीं लगा रहे...

जिले में यातायात नियमों के पालन करने में वाहन चालक लापरवाही कर रहे हैं। सड़क से गुजरने वाले हर 10 में से नौ बाइक सवार बिना हेलमेट के ही हैं। तीन सवारी भी निकल रहे हैं तो बच्चे भी बड़े वाहन दौड़ा रहे हैं। इस कारण कई बार हादसे भी हो चुके हैं, लेकिन कोई सबक लेने को तैयार नहीं। नियमों के प्रति लोगों की लापरवाही जिसमें सबसे ज्यादा बिना हेलमेट वाहन चलाने वालों के चालान बनाए गए जाते हैं। लोग जुर्माना भरने को तैयार हैं, पर यातायात नियमों का पालन करने को तैयार नहीं है।

गौ-शालाओं को मिलने वाली राशि में होगी वृद्धि-मुख्यमंत्री

प्रदेश में चैत्र माह से अगले वर्ष तक गौ-वंश रक्षा वर्ष मनाया जाएगा, सड़कों पर गायें न बैठें, ऐसे प्रबंध करेंगे, कुशाभाऊ ठाकरे सभागृह में गौ-रक्षा संवाद में आये संपूर्ण देश से गौ-शाला संचालक और गौ-सेवक

मंदसौर, 7 मार्च गुरु एक्सप्रेस। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कहा है कि प्रदेश में गौ-माता और गौ-वंश के संरक्षण के लिए सभी आवश्यक कदम उठाए जाएंगे। गौ-शालाओं के बेहतर संचालन के लिए उन्हें दी जा रही राशि में वृद्धि की जाएगी। गौ-रक्षा संवाद निरंतर होता रहेगा। इस विषय पर विचार-विमर्श की प्रक्रिया जारी रहेगी, ताकि गायों और गौ-शालाओं के बेहतर प्रबंधन के उपाय किये जा सकें। प्रदेश में चरनोई की भूमि पर अतिक्रमण हटाने, प्रति 50 किलोमीटर पर सड़कों पर दुर्घटना का शिकार हुई गायों को इलाज के लिए भिजवाने और सड़कों पर बैठने वाले पशुधन को बैठने से रोकने या अन्यत्र स्थानांतरित करने के लिये आधुनिक उपकरणों की सहायता ली जायेगी। गायों के लिए चारा काटने के उपकरणों पर अनुदान की व्यवस्था की जायेगी। पंचायतों को आवश्यक सहयोग और प्रेरणा मिले, इसके लिए गौ-संवर्धन बोर्ड प्रयास करेगा। गायों के लिए गौ-शालाओं को प्रति गाय की राशि 20 रुपए से बढ़ाकर 40 रुपए प्रदान की जायेगी। अधूरी गौ-शालाओं का निर्माण पूर्ण किया जायेगा। नई गौ-शालाएं भी बनेंगी। मुख्यमंत्री डॉ. यादव आज कुशाभाऊठाकरे सभागृह में 'मध्यप्रदेश में गौ-शालाओं के बेहतर प्रबंधन पर आयोजित हितधारकों की कार्यशाला' - 'गौ-रक्षा संवाद' के समापन सत्र को संबोधित कर रहे थे।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि गौ-पालक ही गाय का महत्व समझता है। हमारे देश में गाय पालना, गौ-शाला चलाना पवित्र कार्य है। गौ-शाला संचालन से ज्यादा बेहतर काम यह है कि घर में ही गौ-पालन किया जाये। यदि पर्याप्त जगह है, तो गाय अवश्य पालें। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि उनके परिवार में भी गाय पालने की पुरानी परम्परा है। आज भी वयोवृद्ध पिता, बूढ़ी गायों की सेवा करते हैं। गाय को माँ स्वरूप मानते हैं। गौ-पालक परिवार यदि गाय के दूध का उपयोग करता है, तो सेवा में भी पीछे नहीं रहना चाहिये। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि कृषि के साथ पशुपालन की परम्परा रही है। राज्य सरकार का प्रयास होगा कि गौ-वंश के सम्मान के साथ दुग्ध उत्पादन में वृद्धि हो और गौ-शालाएं भी आत्मनिर्भर बनें। अन्य पशु अभयारणों से गौ-अभयारण भिन्न है। ये अभयारण गौ-विहार के रूप में विकसित हों, यह आवश्यक है।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि मंत्रि-परिषद की बैठक में इस वर्षाकाल के पूर्व सड़कों पर बैठने वाली गायों की समस्या के दृष्टिगत रखते हुए समुचित प्रबंध करने के लिये मंत्रणा की गई थी। विचार-विमर्श कर सुझाव प्राप्त करने का निर्णय हुआ था। इसीलिये आज यह कार्यशाला हुई है। इसमें विचार-विमर्श के लिए प्रतिभागी अभिनन्दन के पात्र हैं। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने देव-स्थानों के संबंध में मंत्री परिषद समिति के गठन की भी जानकारी दी।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने गौ-रक्षा संवाद के समापन सत्र का दीप प्रज्ज्वलित कर मंत्रोच्चार के साथ शुभारंभ किया। कार्यशाला में आज दिनभर चार समूह बनाकर विषय विशेषज्ञों, गौ-शाला संचालकों, गौ-पालकों और प्रशासकीय अधिकारियों द्वारा निराश्रित गौ-वंश और गौ-शालाओं के बेहतर प्रबंधन पर विचार-विमर्श किया गया। इस अवसर पर श्री अखिलेश्वरानंद गिरि, श्री गोपालानंद सरस्वती जी महाराज, पूर्व सांसद मेघराज जैन, प्रमुख सचिव गुलशन बामरा, संचालक पशुपालन एवं प्रबंध संचालक म.प्र. गौ संवर्धन बोर्ड एवं अन्य अधिकारी उपस्थित थे। मुख्यमंत्री डॉ. यादव को गुजरात से आए पूर्व सांसद एवं चेयरमैन राष्ट्रीय कामधेनु आयोग श्री वल्लभ भाई कठेरिया ने अपनी पुस्तक 'कल्याण गौ-सेवा अंक' भेंट की। पंचायत एवं ग्रामीण विकास, श्रम मंत्री श्री प्रहलाद पटेल ने कहा कि वे स्वयं गौ-पालक हैं। इसलिये इस कार्यशाला से उनका विशेष जुड़ाव है। आज यहां इस क्षेत्र के अनेक जानकारों और विशेषज्ञों के विचार एवं सुझाव जानने का अवसर मिला। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने गौ-पालन से जुड़े महत्वपूर्ण विषय पर कैबिनेट के संकल्प को पूरा किया है। कार्यशाला में प्राप्त अनुशंसाएं उपयोगी हैं। इनसे संबंधित आवश्यक निर्णय मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने लिये हैं। निश्चित ही मध्यप्रदेश की यह पहल अन्य राज्यों के लिए भी महत्वपूर्ण होगी। पशुपालन एवं डेरी विभाग राज्य मंत्री श्री लखन पटेल ने कार्यशाल में प्रस्तुत सुझावों से अवगत करवाया। उन्होंने कहा कि प्राप्त ठोस सुझावों पर क्रियान्वयन भी किया जाएगा।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव द्वारा की गई प्रमुख घोषणाएं- प्रदेश में संचालित गौ-शालाओं को श्रेष्ठ संचालन के लिए पुरस्कृत किया जाएगा। भारतीय नव वर्ष अर्थात इस चैत्र माह से अगले वर्ष तक वह गौ- वंश रक्षा वर्ष मनाया जाएगा। चरनोई की भूमि पर अतिक्रमण हटाए जाएंगे। सड़कों पर गाएं दुर्घटना का शिकार होती हैं। प्रति 50 किलोमीटर पर ऐसी व्यवस्था होगी कि घायल गाय को इलाज के लिए आसानी से ले जाया जा सके। हाईड्रोलिक कैटल लिफ्टिंग व्हीकल का टोल व्यवस्था के अंतर्गत प्रबंध किया जाएगा। गौ-शालाओं को प्रति गाय 20 रुपए के स्थान पर 40 रुपए की राशि देय होगी। चारा या भूसा काटने के लिए प्रयुक्त होने वाले उपकरण पर अनुदान की व्यवस्था होगी। इसके लिए पंचायतों को आवश्यक सहयोग किया जाएगा। अधूरी गौ-शालाओं का निर्माण पूर्ण किया जाएगा। इसके लिए मनरेगा से भी राशि का उपयोग होगा। नई गौ-शालाएं भी प्रारंभ की जाएंगी। गौ-वंश विहार विकसित किए जाएंगे।

युवा समाजसेवी अरूल अरोरा गंगानगर द्वारा महाशिवरात्रि पर 50 क्विंटल साबूदाना खिचड़ी प्रसाद का वितरण होगा

नीमच, 7 मार्च गुरु एक्सप्रेस। चमत्कारी किलेश्वर महादेव मंदिर पर दिनभर धार्मिक कार्यक्रम नीमच महाशिवरात्रि पर नीमच शहर में स्थित चमत्कारी अति प्राचीन श्री किलेश्वर महादेव मंदिर पर आठ मार्च, शुक्रवार को भक्तों का ताँता लगा रहेगा। मंदिर समिति द्वारा मेला का आयोजन भी रखा गया है। महाशिवरात्रि पर अलसुबह से ही नीमच के महांकाल श्री किलेश्वर महादेव के दर्शन का दौर शुरू हो जाएगा, जो देर रात तक चलता रहेगा। युवा समाजसेवी अरूल अशोक अरोरा गंगानगर द्वारा श्री किलेश्वर महादेव को साबूदाना खिचड़ी का भोग लगाया जाएगा, इसके बाद दोपहर से ही प्रसादी वितरण शुरू हो जाएगा। करीब पचास क्विंटल साबूदाना खिचड़ी का तैयार होगी, जो देर रात तक वितरण की जाएगी। महाशिवरात्रि पर भक्तों का सैलाब उमड़ने की स्थिति को लेकर पुलिस प्रशासन द्वारा अस्थाई पुलिस चोकी की स्थापना की गई है।

वही दो मंदिर परिसर से लेकर मुख्य गेट सीआरपीएफ रोड पर पुलिसकर्मियों की ड्यूटी लगाई गई है। मेले में झूले चकरिया और व्यंजन के लिए स्टाल भी लगाई गई है। चमत्कारी है मंदिर, दर्शन मात्र से दूर हो जाते है भक्तों के कष्ट- मंदिर अतिप्राचीन है और शिवलिंग के दर्शन मात्र से ही भक्तों के कष्ट दूर होते हैं। उनकी मनचाही मुरादें पूरी होती हैं। नीमच ही नहीं बल्कि देश के कौने-कौने में श्री किलेश्वर महादेव के भक्त हैं। श्री किलेश्वर महादेव में शिवलिंग चमत्कारी है। भोलेनाथ के दर्शन से धन की प्राप्ति होती है। कोई भक्त आर्थिक रूप से सक्षम की मन्नत माँगता है तो महादेव उन पर कृपा बरसाते है। कुछ ही दिनों में भक्त में बुरे दिन बदल जाते है। कोई भी बिगड़े काम भी भोलेनाथ बना देते है। यही कारण है कि पूरे विश्व में इनकी ख्याति फैली हुई है।

मध्यप्रदेश श्रमजीवी पत्रकार संघ की जिला इकाई गठित

बंसल जिलाध्यक्ष, डॉ. जैन कार्यकारी अध्यक्ष, भाटी महासचिव मनोनीत

मंदसौर, 7 मार्च गुरु एक्सप्रेस। मध्यप्रदेश श्रमजीवी पत्रकार संघ के प्रदेश अध्यक्ष श्री शलभ भदौरिया ने उज्जैन संभागीय अध्यक्ष श्री राजेन्द्र राठौर, संभागीय कार्यकारी अध्यक्ष डॉ. प्रीतिपालसिंह राणा की अनुशंसा पर मंदसौर जिला इकाई की घोषणा की है। मंदसौर जिलाध्यक्ष पद पर प्रकाश बंसल (पिपलियामंडी), कार्य. अध्यक्ष पद पर डॉ. अजीत जैन (दलौदा) व जिला महासचिव पद पर संजय भाटी (मंदसौर) को मनोनीत किया गया है। जिला कार्यकारिणी में उपाध्यक्ष पद पर अशोक कुमार दक (मल्हारगढ़), लालचंद रूद्रवाल (भानपुरा), मोहनसिंह भंसाली (सीतामऊ), सचिव पद पर मनीष जैन (सुवासरा), विरेन्द्रसिंह राठौर मजेसरी (दलौदा), विपिन चौहान (मंदसौर), गजेन्द्रसिंह मण्डलोई (नाहरगढ़), राजमल मुजावदिया (मेलखेड़ा-गरोठ), रूपेश सौलंकी (मंदसौर), संदीप विजयवर्गीय (मल्हारगढ़) को मनोनीत किया गया है। जिला कोषाध्यक्ष पद पर भानुप्रतापसिंह राणा एवं संयुक्त सचिव पद पर बी.एल. धमानिया (धमनार), रमेशचन्द्र सोनी (शामगढ़), हिम्मत जैन (नाहरगढ़) को मनोनीत किया गया है। जिला कार्यकारिणी में सदस्य के रूप में निलेश शुक्ला (बालागुढ़ा), राजेन्द्र (राजू) सोनी (मंदसौर), राजेन्द्र परिहार (शामगढ़), विश्वास दुबे (मंदसौर), मुकेश आसलिया (लदूना-सीतामऊ) को मनोनीत किया गया है। ये सभी नियुक्तियां एक वर्ष के लिये कार्यवाहक महासचिव सत्यनारायण वैष्णव के हस्ताक्षर से भेजे गये पत्र के माध्यम से हुई है।

सुबह-शाम सर्दी, दोपहर में गरमी

मंदसौर, 7 मार्च गुरु एक्सप्रेस। अंचल में मार्च के पहले सप्ताह में रोज तापमान में उतार चढ़ाव देखने को मिल रहा है। तापमान में परिवर्तन के चलते सुबह-शाम हल्की ठंड का अहसास हो रहा है। दोपहर में धूप के चलते गर्मी लग रही है। दोपहर ढलने के साथ ही पश्चिमी विक्षोभ के प्रभाव से हल्के बादल नजर आए। मंगलवार से एक नया पश्चिमी विक्षोभ भी सक्रिय हुआ है। इसके चलते 10 मार्च तक बादलों की आवाजाही देखने को मिल सकती है। मौसम विभाग के अनुसार फिलहाल 10 मार्च तक मौसम ऐसा ही रहेगा। इसके बाद तापमान में बढ़ने लगेगा।

उत्तरी हवा से लगातार चौथे दिन न्यूनतम तापमान में गिरावट दर्ज की गई। न्यूनतम तापमान गुरुवार को लुढ़ककर 12.7 डिग्री सेल्सियस तक उतर गया। धूप खिलने से अधिकतम तापमान में एक डिग्री की बढ़त हुई। अधिकतम तापमान 28.7 डिग्री सेल्सियस दर्ज हुआ। मंगलवार को सक्रिय हुए पश्चिमी विक्षोभ का असर 10 मार्च तक बने रहने की संभावना है। इसके बाद धीरे धीरे तापमान बढ़ने के बाद गर्मी का असर शुरू होने लगेगा।

अज्ञात वाहन की टक्कर से बाइक सवार की मौत

नीमच, 7 मार्च गुरु एक्सप्रेस। सिटी थाना क्षेत्र के नीमच-झालावाड़ मार्ग पर बुधवार की रात एक सड़क हादसा हो गया। जिसमें अज्ञात वाहन ने एक बाइक सवार को जोरदार टक्कर मार दी थी। इस सड़क हादसे में एक युवक की दर्दनाक मौत हो गई। जानकारी अनुसार गांव आंकली निवासी चैनसुख पिता पृथ्वीराज सिंह परमार अपनी बाइक से नीमच से मनासा की ओर जा रहा था। इसी दौरान अज्ञात वाहन ने नीमच-झालावाड़ रोड़ स्थित गांव गिरदोड़ा के समीप जोरदार टक्कर मार दी। जिसमें युवक गंभीर रूप से घायल हो गया। घायल युवक को तत्काल 108 एंबुलेंस की सहायता से नीमच के बड़े अस्पताल लाया गया। जहां चिकित्सकों ने उसे मृत घोषित कर दिया है। बताया जा रहा है कि युवक धानुका फैक्ट्री में सुरक्षा गार्ड की नौकरी करता था। हादसा तब हुआ जब वह शाम को ड्यूटी खत्म कर से घर लौट रहा था। इसी दौरान किसी वाहन ने उसे टक्कर मार दी। मृतक के शव का पोस्टमार्टम कर शव परिजनों के सुपुर्द कर दिया गया है। मामले में पुलिस ने मर्ग कायम कर जांच शुरू करती है।

महिला दिवस पर डॉ. उषा अग्रवाल सम्मानित

मंदसौर, 7 मार्च गुरु एक्सप्रेस। महाविद्यालय द्वारा कुशाभाऊ ठाकरे ऑडिटोरियम में आज महिला दिवस के अवसर पर उत्कृष्ट कार्य के लिए महाविद्यालय द्वारा डॉ. उषा अग्रवाल, (विभागाध्यक्ष इतिहास विभाग, पीजी कॉलेज मंदसौर)को सम्मानित किया गया। प्राचार्य डॉ. एल.एन.शर्मा ने बताया कि महिला दिवस पर इस वर्ष नवाचार करते हुए महाविद्यालय की समस्त महिला स्टाफ का सम्मान करने के साथ उत्कृष्टकार्य हेतु एक प्राध्यापक एवं तीन छात्राओं का सम्मानित करने का निर्णय लिया गया। इस वर्ष यह विशेष सम्मान के लिए डॉ. उषा अग्रवाल का चयन किया गया। इस वर्ष डॉ. अग्रवाल फ्रांस, जापान और अल्मोड़ा में आयोजित तीन अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठियों में भाग लेकर महाविद्यालय का प्रतिनिधित्व कियाऔर मंदसौर जिले की सांस्कृतिक विरासत को विश्व पटल पर रखा।

डॉ. उषा अग्रवाल इतिहास एवं पर्यटन की प्राध्यापक हैं। डॉ.अग्रवाल लगभग 33 वर्षों से मंदसौर जिले के इतिहास एवं पर्यटन पर शोध कार्य कर रही है। इस हेतु आपको विभिन्न शोध प्रोजेक्ट भारत सरकार द्वारा दिए गए। भारत सरकार की इतिहास विषय की प्रमुख संस्था इतिहासअनुसंधान परिषद नई दिल्ली द्वारा विरासत प्रबंधन पर आधारित पुस्तक को हाल ही में प्रकाशित किया है।आपकी चार पुस्तकें और लगभग 50 शोध पत्र प्रकाशित किया हैं। आपने अनेक राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठियों में इतिहास, संस्कृति एवं पर्यटन और विरासत पर आधारित शोध पत्रों का वाचन किया श्रमंदसौर जिले के विरासत का संरक्षण एवं पर्यटन के विकास में आपका महत्वपूर्ण योगदान है। इस अवसर पर राष्ट्रीय खिलाड़ी आरती मांडलिक,एन.एस.एस. में दी गई सेवाओं के लिए प्रियामाली व एन.सी.सी. में दी गई सेवाओं के लिए नर्मदापाटीदार को सम्मानित किया गया।

जिला प्रेस क्लब, नीमच का शपथ समारोह कल

नीमच, 7 मार्च गुरु एक्सप्रेस। जिला प्रेस क्लब, नीमच (रजि.) के शपथ विधि समारोह का आयोजन शनिवार 9 मार्च को टाउनहाल नीमच में आयोजित किया जा रहा है। जिसमे जिला प्रेस क्लब, नीमच के नवनिर्वाचित पदाधिकारी शपथ ग्रहण करेगे। नीमच जिला प्रेस क्लब के 2024 के लिए पदाधिकारी व कार्यकारिणी का गठन हुवा। 14 जनवरी को नीमच जिले के तहसील व ग्रामीण पत्रकारों की उपस्थिति में संपन्न हुए हैं। जिसमे नवनिर्वाचित अध्यक्ष विष्णु मीणा एवं पदाधिकारियों, कार्यकारिणी सदस्यों का शपथ समारोह 9 मार्च 2024 को प्रात: 10 बजे स्थानीय श्री अटल बिहारी टाउन हाल दशहरा मैदान नीमच में सम्पन्न होगा। इस दौरान जिला प्रेस क्लब के सभी सदस्यों के प्रेस कार्ड का भी वितरण व सहभोज किया जावेगा व जिला प्रेस क्लब नीमच की अधिकृत वेबसाइट का नवीन रूप में विमोचन होगा।

उक्त आयोजन हेतु आमंत्रित अथितियो द्वारा स्वीकृति प्रदान करने के बाद समारोह में मुख्य अतिथि नीमच विस क्षेत्र के विधायक दिलीपसिंह जी परिहार, प्रदेश के पूर्व काबिना मंत्री ओमप्रकाश जी सकलेचा, जिलाधीश दिनेश जी जैन, नगर पालिका नीमच अध्यक्ष स्वाति गौरव जी चौपड़ा, भाजपा जिलाध्यक्ष पवन जी पाटीदार व सरक्षंक एवं गणमान्य नागरिक उपस्थित रहेंगे। जिले के समस्त जिला प्रेस क्लब के पत्रकार साथियों की उपस्थिति में जिला प्रेस क्लब के पदाधिकारियों व कार्यकारिणी की शपथ सम्पन्न होकर पत्रकार साथियों को मंचासीन अतिथि उनके हित का आशीर्वाद भी देंगे।

ब्रह्माकुमारी आज निकालेगी शिव संदेश रैली

मंदसौर, 7 मार्च गुरु एक्सप्रेस। महाशिवरात्रि के पर्व पर आज 8 मार्च 2024 शुक्रवार को प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय के स्थानीय आत्म कल्याण केंद्र स प्रात: 9 बजे विशाल शिव संदेश रैली निकाली जाऐगी जो प्रमुख मार्गों पर शिव जयघोष लगाकर पुन: आत्म कल्याण भवन तलेरा विहार पर संपन्न होगी। रेली का शुभारंभ पूर्व विधायक यशपालसिंह सिसोदिया शिव ध्वज फहराकर करेंगे।

यह जानकारी देते हुए आत्म कल्याण भवन की संचालिका बीके उषा ने बताया कि शिवरात्रि का पर्व ब्रह्माकुमारी द्वारा भी धूमधाम से मनाया जाता है। बिते दिनों आत्म कल्याण भवन पर शिव ध्वज फहराकर शिवरात्री महोत्सव का प्रारंभ हुआ, कई गणमान्यजनों के निवास समेत कई जगहों पर भी ध्वज फहराऐ गऐ इसके बाद आज 8 मार्च को सुबह 9 बजे शिव संदेश रैली निकाली जाऐगी जो रैली नई आबादी, गुप्ता कचोरी, बीपीएल चौराहा, गांधी चौराहा, बस स्टैंड, भारत माता चौराहा, घंटाघर, शुक्ला चौक, नयापुरा रोड, लक्कड़पीठा, गोल चौराहा, कंबल केंद्र रोड होते हुए आत्म कल्याण भवन पर संपन्न होगी। रैली में शिव संदेश देते हुए शिव तथा लक्ष्मी -नारायण की झांकी का भी सुंदर चित्रण किया जाऐगा।

सोने की कीमतों ने छुआ आसमान, चांदी में भी दिखी तेजी

इंदौर, 7 मार्च गुरु एक्सप्रेस। भारतीय सर्राफा बाजार में 7 मार्च 2024 को सोने के भाव में तेजी आई है। सोने का भाव 65049 रुपए प्रति 10 ग्राम हो गया है। 6 मार्च 2024 को सोने के शाम के भाव की तुलना में 556 रुपये की तेजी आई है। चांदी के भाव में भी तेजी आई है। चांदी का भाव 72121 रुपये प्रति किलो हो गया है। राष्ट्रीय स्तर पर 999 शुद्धता वाले चांदी के भाव में 6 मार्च से 411 रुपये की तेजी आई है। इंडिया बुलियन एंड ज्वेलर्स के अनुसार 6 मार्च की शाम को 999 शुद्धता वाले 24 कैरेट सोने की कीमत 64493 रुपये थी। 7 मार्च की शाम को 999 वाले 24 कैरेट सोने की कीमत 65049 रुपये हो गई है। 6 मार्च फरवरी की शाम को 999 शुद्धता वाली चांदी की कीमत 71710 रुपये थी। 7 मार्च की सुबह को 999 शुद्धता वाली चांदी की कीमत 72121 रुपये हो गई। 7 मार्च को 995 शुद्धता वाले सोने की कीमत 64789 रुपये हो गई है। 916 शुद्धता वाले सोने की कीमत 59584 रुपये हो गई है। 750 शुद्धता वाले सोने की कीमत 48786 रुपये हो गई है। 585 शुद्धता वाले सोने की कीमत 38053 रुपये हो गई है।

दिव्य वातावरण में घुलेंगे शिव के स्वर

मंदसौर, 7 मार्च गुरु एक्सप्रेस। मध्यप्रदेश शासन, संस्कृति विभाग द्वारा मंदसौर सहित मध्यप्रदेश के 10 स्थानों पर महाशिवरात्रि के पावन अवसर पर 8 मार्च से 10 मार्च 2024 को 'महादेव' महोत्सव आयोजित किया जाएगा, जिसमें शिव—सत्य की कला अभिव्यक्तियों से सम्पूर्ण मध्यप्रदेश दमक उठेगा। जिन स्थानों पर यह महोत्सव किया जाना हैं वे भगवान शिव के पवित्र एवं प्रसिद्ध स्थल हैं। संचालक संस्कृति श्री एन.पी. नामदेव ने बताया कि शिव मंदिर पशुपतिनाथ मंदसौर, के आराधना हॉल में 8 मार्च को श्री शंकर लाल धौलपुरे एवं साथी, देवास द्वारा लोकगायन, सुश्री प्राची घारे एवं साथी, इंदौर द्वारा शिव केंद्रित समूह नृत्य एवं श्री नमन तिवारी एवं साथी, भोपाल द्वारा भक्ति गायन की प्रस्तुति दी जावेगी। कार्यक्रम सायं 6:30 बजे से प्रारंभ होगा। कार्यक्रम में प्रवेश नि:शुल्क होगा।

पिकअप पलटी

पिपलियामंडी, 7 मार्च गुरु एक्सप्रेस। किराना सामान से भरा पिकअप पलट गया, जिसमें भरा सामान सड़क पर बिखर गया, गनीमत रही कोई जनहानि नही हुई। जानकारी के अनुसार बुधवार को फोरलेन पर रोड के राजा के पास दोपहर यह पिकअप पलटी, जिसमें तेल की टंकिया व किराना सामान था। इस दौरान टक्कर लगने से स्कूटी पर सवार एक सूठोद की महिला भी घायल हो गई। सूचना पर पुलिस भी पहुंची, बाद में पिकअप व बिखरी सामाग्री को सड़क से हटवाया।

पत्नी को पीटा व दांतों से काटा, पति पर केस दर्ज

पिपलियामंडी, 7 मार्च गुरु एक्सप्रेस। पति ने पत्नी को पीटा, पुलिस ने केस दर्ज किया। ढाबला गुर्जर निवासी तेजाबाई ने नाहरगढ़ थाने पर शिकायत दर्ज कराई कि उसकी शादी 4 वर्ष पूर्व नयागांव निवासी बालाराम से हुई थी। लेकिन पति आए दिन छगड़ा करता था तो अपने पिता के यहां रह रही थी। बुधवार शाम पति घर आया और साथ चलने की कहा, मैंने मना किया ततो गाली-गलौज की, लकड़ियों से मारा व उंगलियों पर दांतों पर काट लिया। बीच-बचाव करने आई मेरी मां रेखाबाई व बहन काजल के भी हाथ पर काट लिया। पुलिस ने आरोपी के खिलाफ केस दर्ज किया।

सांसद निधि द्वारा प्राप्त 11 कम्प्यूटर से बनी नवीन लेब का लोकार्पण

मंदसौर, 7 मार्च गुरु एक्सप्रेस। सरस्वती विद्या मंदिर उ.मा. वि. केशव नगर, मंदसौर में मंदसौर लोकसभा संसदीय क्षेत्र के सासंद महोदय श्री सुधीर जी गुप्ता द्वारा विद्यालय में 11 कम्प्यूटर सेट प्रदान किए गए। जिसके लोकार्पण में मुख्य अतिथि सरस्वती विद्या प्रतिष्ठान मालवा प्रान्त के संगठन मंत्री माननीय श्री अखिलेश जी मिश्र, विशेष अतिथि श्री राजदीप जी परवाल सांसद प्रतिनिधि, कार्यक्रम अध्यक्ष मंदसौर विभाग के विभाग समन्वयक श्री कैलाश जी धनगर साथ ही सरस्वती विद्या प्रतिष्ठान मालवा प्रान्त के प्रादेशिक सचिव श्री प्रकाश जी धगनर, सह प्रान्त प्रमुख श्री सुन्दरलाल जी शर्मा के आतिथ्य में सम्पन्न हुआ। साथ ही प्रो. राजेन्द्रसिंह शिक्षण समिति के सचिव श्री मिलिन जी व्यास, सहसचिव श्री चन्द्रशेखर जी हलकारा, कोषाध्यक्ष श्री नितेश जी भदादा समिति सदस्य श्री प्रमोद जी सेठिया, श्री हेमंत जी मूलचंदानी, श्री दिनेश जी पालीवाल, विद्यालय के प्रधानाचार्य श्री राजपालसिंह सिसोदिया, अभिनन्दन नगर विद्यालय के प्रधानाचार्य श्री मुकेश जी पाठक विद्यालय के आचार्य दीदी उपस्थित रहे।

बीजेपी के सांसद गुप्ता से... पेज 1 से जारी

साफ है कि पिछले विधानसभा चुनाव जिस जनमत की ताकत के सहारे कांग्रेस ने जीता था। उसमें ही बड़ी गिरावट दो दर्जन विधायकों के उपचुनाव में आ गई थी। अब 4 महीने पहले के विधानसभा चुनाव में और भी अधिक जनमत की गिरावट ने कांग्रेस को 66 सीट पर समेट कर रख दिया। इसके बाद रामलला प्राण प्रतिष्ठा समारोह ने और अधिक कांग्रेस का जनाधार निश्चित ही घटा दिया होगा। संसदीय क्षेत्र में इस तरह का वातावरण तो नजर आ ही रहा है। इसलिए कहा जा रहा है कि कांग्रेस प्रत्याशी कैसे मुकाबला कर पाएगा भाजपा प्रत्याशी सुधीर गुप्ता का!

शो-पीस के लायक भी नहीं... पेज 1 से जारी

अध्यक्ष रामादेवी गुर्जर, जनपद अध्यक्ष बसंत शर्मा, पूर्व पार्षद संजय सोनी की मौजूदगी में घंटे का मामला उठते ही सभी जनप्रतिनिधियों ने एक मत होकर महाघंटा मामले की जांच तथा घंटे को पुन: चालू करने का प्रस्ताव को रखा। जनप्रतिनिधियों ने घंटे की जांच की मांग भी रखी। इधर अधिकारियों ने तकनीकी खराबी के कारण महाघंटे को खराब होना बताया।

भक्तों के धातु दान से बना महा घंटा–महा घंटे के निर्माण के लिए 2017 में अभियान चलाया गया। युवाओ की एक समिति ने शुरुआत में मंदिर में 21 क्विंटल वजनी घंटे को स्थापित करने का लक्ष्य निर्धारित किया था। जिसे पूरा करने के लिए श्री कृष्ण कामधेनु संस्था के सदस्यों ने हर रविवार जिले में यात्रा निकाली। सदस्यों ने 150 से ज्यादा यात्राओं के माध्यम से मंदसौर शहर और ग्रामीण इलाकों से तांबा-पीतल जमा किया। भक्तों ने घंटा निर्माण में सहयोग देने के लिए बढ़ चढ़ कर भाग लिया और पुराने बर्तन महा घंटा निर्माण के लिए दान दिए। भक्तों ने धातु दान के साथ ही नगद राशि भी सहयोग के रूप में प्रदान की।

गुजरात की कंपनी ने 6 माह में बनाया था घंटा–गुजरात के अहमदाबाद की एक कंपनी को महाघंटा निर्माण का ठेका दिया। घंटे के निर्माण में करीब 36 लाख रुपये की लागत आई है। भक्तों से दान में करीब 25 क्विंटल तांबा-पीतल मिला था। धातु के अलावा 15 लाख रुपये और लागत लगी। महा घंटे के लिए समिति ने करीब साढ़े 3 लाख रुपये की राशि चुकाई है। गुजरात से मध्य प्रदेश तक महा घंटे को एक स्पेशल ट्रॉली में रखकर लाया गया था।

मोदी की गारंटी, सरकार रच रही विकास के नए आयाम-अटोलिया

लोकसभा चुनाव में विकसित भारत संकल्प पत्र निर्माण में आमजन की भूमिका पर भाजपा लेगी सुझाव

मंदसौर, 7 मार्च गुरु एक्सप्रेस। लोकसभा चुनाव 2024 को दृष्टित रखते हुए विकसित भारत संकल्प पत्र निर्माण में आमजन की भूमिका, मोदी एप व मिस्ड कॉल नंबर के संबंध में भाजपा जिलाध्यक्ष नानालाल अटोलिया ने विकसित भारत मोदी की गारंटी आकांक्षा संग्रहण अभियान की जानकारी देते हुए बताया की इस अभियान के तहत भारतीय जनता पार्टी आमजनों से लोकसभा चुनाव के संकल्प पत्र हेतु सुझाव लेगी। संकल्प पत्र के सुझाव प्राप्त करने के लिए भाजपा के सभी जिला और विधानसभा कार्यालयों में सुझाव पेटी रखी जायेगी। भाजपा कार्यकर्ता 8 से 12 मार्च के बीच प्रत्येक बूथ तक पहुंचे और लोगों से भाजपा के संकल्प पत्र के लिए सुझाव एकत्रित करेंगे। इसके अलावा 9090902024 पर मिस्ड कॉल एवं नमो ऐप के माध्यम से भी लोगों के सुझाव लिये जायेंगे। उन्होंने बताया कि सभी माध्यमों से सुझाव एकत्रित करने के बाद भारतीय जनता पार्टी लोकसभा चुनाव 2024 के लिए अपना संकल्प पत्र बनायेगी। श्री अटोलिया ने बताया की इस अभियान अंतर्गत आमजनों से लोकसभा चुनाव के संकल्प पत्र हेतु सुझाव देने का आग्रह किया। साथ ही कहा की संकल्प पत्र हेतु हम हर घर तक जाएंगे और सभी से भारत को विकसित समृद्ध और सशक्त भारत बनाने के लिए उनके सुझाव लेंगे। इसके साथ ही आमजन पार्टी द्वारा जारी मोबाइल नंबर पर मिस कॉल करके अपने सुझाव दे सकते हे तो वही ऑनलाइन के माध्यम से नमो ऐप में भी अपलोड कर सुझाव दे सकते हे। सुझाव संकलित कर सुझाव पेटी प्रदेश कार्यालय में संकल्प पत्र निर्माण समिति के पास सभी सुझाव भेज दिए जाएंगे। भाजपा जिलाध्यक्ष नानालाल अटोलिया ने बताया की प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी की सरकार में हर व्यक्ति को अपने विचार और देश के विकास में अपने सुझाव रखने का पूरा अधिकार है। मोदी की गारंटी ही गांव गरीब किसान के कल्याण विकास और उत्थान का मार्ग प्रशस्त करती है। आज मोदी जी के नेतृत्व में पूरा भारत संपूर्ण विश्व में सर्वाधिक तीव्र गति से विकास और बुलंदियों को अर्जित करने वाला देश बनते जा रहा है। आज देश का युवा किसान और व्यवसाय अपने आप को गौरवान्वित महसूस कर रहा है। भारत में सभी वर्ग सम्मान से अपने कार्य को करते हुए अपने देश का नाम रोशन कर रहे हैं।

कार्यालय जिला परिवहन अधिकारी रतलाम (मप्र)

क्रमांक/ दिनांक 07.03.2024

विज्ञप्ति

सर्व साधारण को सूचित किया जाता है कि वाहन स्वामी श्रीमती कविता पौडवाल पति जगदीश पौडवाल निवासी ग्राम कराड़िया, तहसील आलोट, जिला रतलाम की मृत्यु दिनांक 01.08.2023 को हो चुकी है।इनके ट्रेक्टर जिसका रजिस्ट्रेशन क्रमांक एमपी 43 जेडडी 3022 को इनके पति जगदीश पौडवाल ने अपने नाम पर अंतर्गण दर्ज कराने हेतु इस कार्यालय में मूल दस्तावेज प्रस्तुत किये है।

इस प्रकाशन अवधि के सात दिवस में यदि किसी को आपत्ति हो तो इसे कार्यालय में प्रस्तुत करें। इसके पश्चात ट्रेक्टर को जगदीश पौडवाल के नाम से अंतरण कर दिया जावेगा।

जिला परिवहन अधिकारी, रतलाम (म.प्र.)

स्वत्वाधिकारी, सम्पादक, प्रकाशक, मुद्रक आशुतोष नवाल के लिए गुरु मीडिया एण्ड इंटरटेनमेन्ट कम्पनी, शक्ति नगर मन्दसौर से मुद्रित एवं 77 लक्ष्मीनगर, वेदान्त विहार मन्दसौर से प्रकाशित। (हर प्रकार के विवाद का न्याय क्षेत्र मन्दसौर रहेगा) संपादक– आशुतोष नवाल RNI-MPHIN2006/20356
समाचार पत्र में छपे विज्ञापनों के लिए समाचार पत्र उत्तरादायी नहीं है एवं विज्ञापनो में प्रकाशित विचार विज्ञापनदाता की निजी राय है। इससे समाचार पत्र का कोई संबंध नहीं है। फोन 495831, मो. 9425105927,28 ashugurumds@gmail.com, ashu_guru2@yahoo.co.in